बुनियादी साक्षरता एवं बहुभाषी शिक्षण

ब्लॉक स्त्रोत समूह

प्रशिक्षण मॉड्यूल

ले-आउट एवं डिज़ाइन
शशि गुप्ता (ग्राफिक डिज़ाइनर) नई दिल्ली

प्रशिक्षण मॉड्यूल

बुनियादी साक्षरता एवं बहुभाषी शिक्षण

ब्लॉक स्त्रोत समूह

छत्तीसगढ़

बुनियादी साक्षरता एवं बहुभाषी शिक्षण

पाँच दिवसीय कार्यशाला

दिवस : 1

सत्र	समय	सत्र का विषय	प्रक्रिया	सामग्री
सत्र : 0	9:30AM - 10:00AM	प्रतिभागियों का रजिस्ट्रेशन व सामग्री वितरण	सभी प्रतिभागियों का रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा व सामग्री वितरित की जाएगी।	रजिस्टर, पेन, डायरी व नाम कार्ड
सत्र : 1	10:00AM - 10:30AM	परिचय सत्र व गीत-कविता	खेल गतिविधि द्वारा सभी प्रतिभागियों का आपसी परिचय करवाया जाएगा व प्रशिक्षण के लिए खुशनुमा माहौल बनाया जाएगा।	
सत्र : 2	10:30AM – 11:00AM	DEO/ BEO द्वारा कार्यशाला का उदघाटन	संबोधन द्वारा	
सत्र : 3		**बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान व निपुण भारत मिशन** - FLN क्या व क्यों? - निपुण भारत मिशन को समझना - बुनियादी कौशल क्या हैं और क्यों जरूरी हैं?	चर्चा व गतिविधि व समूह कार्य द्वारा	पीपीटी, वीडियो, लेख, चार्ट, स्टिकी नोट, चार्ट पेपर
लंच	1:00PM – 2:00PM			
गतिविधि	2:00PM – 2:15PM	Ice Breaking Activity		
सत्र : 4	2:15PM – 5:00PM	**बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान व निपुण भारत मिशन** - मिशन द्वारा निर्धारित सीखने के प्रतिफलों व लक्ष्यों पर चर्चा।	चर्चा व गतिविधि व समूह कार्य द्वारा	पीपीटी, वीडियो, लेख, चार्ट, स्टीकी नोट, चार्ट पेपर

		- कोविड की स्थिति का प्रभाव व उस पर आगे कैसे काम किया जाए ?		

दिवस : 2

सत्र	समय	सत्र का विषय	प्रक्रिया	सामग्री
सत्र : 0	9:30AM - 10:00AM	खेल गतिविधि एवं पिछले दिन की मुख्य बातों का क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा याद करना	कुछ खेल गतिविधियाँ व क्विज/ प्रश्नों के द्वारा पिछले दिन के सत्र की मुख्य बातों को याद किया जाएगा व अगर कोई बिन्दु किसी प्रतिभागी को समझ नहीं आया हो तो उस पर समझ बनाना।	
सत्र : 1	10:00AM - 11:30AM	**बच्चे की भाषा महत्वपूर्ण क्यों है?**	वीडियो दिखाकर चर्चा करना व लेख पढ़कर चर्चा द्वारा।	एकल भाषी और बहुभाषी कक्षा की तुलना का विडियो, QR Code, बहुभाषी शिक्षण हैंडबुक-ब्लॉक स्रोत समूह
सत्र : 2	11:30AM - 12:00PM	**बहुभाषी शिक्षा और कानूनी प्रावधान**	क्विज व उस पर आधारित चर्चा द्वारा।	बहुभाषी शिक्षण हैंडबुक-ब्लॉक स्रोत समूह (पृष्ठ – 52 से 54), हैंडआउट - निपुण भारत, कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग
सत्र : 3	12:00PM - 01:00PM	**बहुभाषी शिक्षा क्या है?**	चर्चा करते हुए एक वीडियो के माध्यम से बहुभाषी शिक्षा पर बातचीत की जाएगी।	बहुभाषी कक्षा का विडियो,QR Code, बहुभाषी शिक्षण हैंडबुक-ब्लॉक स्रोत समूह
लंच	01:00PM - 02:00PM			
गतिविधि	2:00PM – 2:15PM	Ice Breaking Activity		

सत्र : 4	2:15PM – 3:45PM	**बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ**	प्रतिभागियों से बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियों पर चर्चा व समूह कार्य।	चार्ट पेपर, स्केच पेन, बहुभाषी शिक्षण हैंडबुक- ब्लॉक स्रोत समूह
सत्र : 5	3:45PM – 5:00PM	**भाषा शिक्षण की संतुलित पद्धति** - भाषा शिक्षण की संतुलित पद्धति को समझना। - भाषा के कौशलों को अर्थ केन्द्रित व शब्द पहचान केन्द्रित कार्यों में विभाजित कर पाना। - कक्षा में संतुलन के तरीकों की समझ व चार खंडीय रूपरेखा से परिचय।	संतुलन क्या व कैसे ? पर चर्चा करते हुए कक्षा शिक्षण में संतुलन क्या व कैसे बनाया जाए। शिक्षण में संतुलन को समझने के लिए गतिविधियां व चार खंडिय रूपरेखा का परिचय।	वीडियो, गतिविधि संग्रह

दिवस : 3

सत्र	समय	सत्र का विषय	प्रक्रिया	सामग्री
सत्र : 0	9:30AM - 10:00AM	खेल गतिविधि एवं पिछले दिन की मुख्य बातों का क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा याद करना।	कुछ खेल गतिविधियाँ व क्विज/ प्रश्नों के द्वारा पिछले दिन के सत्र की मुख्य बातों को याद किया जाएगा व अगर कोई बिन्दु किसी प्रतिभागी को समझ नहीं आया हो तो उस पर समझ बनाना।	
सत्र : 1 व 2	10:00AM - 01:00PM	**मौखिक भाषा विकास** - मौखिक भाषा विकास के लिए वर्तमान में स्कूलों में क्या क्या होता है ? - मौखिक भाषा विकास क्या व इसका महत्व - मौखिक भाषा विकास क्यों आवश्यक है ?	मौखिक भाषा के वर्तमान परिदृश्य पर चर्चा करते हुए मौखिक भाषा क्या, क्यों व कैसे की समझ विकसित करना। मौखिक भाषा विकास की रणनीतियाँ व गतिविधियाँ पर चर्चा।	वीडियो, लेख

		- मौखिक भाषा विकास से जुड़ी रणनीतियाँ व गतिविधियाँ ।		
लंच	01:00PM - 02:00PM			
गतिविधि	2:00PM – 2:15PM	Ice Breaking Activity		
सत्र : 3 व 4	2:15PM – 5:00PM	**डिकोडिंग** - डिकोडिंग क्या है और यह क्यों ज़रूरी है ? - वर्तमान में डिकोडिंग का शिक्षण - डिकोडिंग का व्यवस्थित शिक्षण - व्यवस्थित डिकोडिंग शिक्षण से जुड़ी गतिविधियाँ	गतिविधि आधारित चर्चा करते हुए व समूह कार्य द्वारा डिकोडिंग पर समझ बनाना	विडियो, लेखा व डिकोडिंग का टीएलएम

दिवस : 4

सत्र	समय	सत्र का विषय	प्रक्रिया	सामग्री
सत्र : 0	9:30AM - 10:00AM	खेल गतिविधि एवं पिछले दिन की मुख्य बातों का क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा याद करना	कुछ खेल गतिविधियाँ व क्विज/ प्रश्नों के द्वारा पिछले दिन के सत्र की मुख्य बातों को याद किया जाएगा व अगर कोई बिन्दु किसी प्रतिभागी को समझ नहीं आया हो तो उस पर समझ बनाना ।	
सत्र : 1	10:00AM - 12:00PM	**प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ना** - पढ़ना क्या है और पढ़ने में क्या क्या शामिल है ? - पठन विकास के चरण क्या हैं ? - प्रवाहपूर्ण पठन की आवश्यक शर्तें	लेख - पढ़ना क्या है पर चर्चा करना व पढ़ने की प्रक्रिया पर साझी समझ बनाना । गतिविधियों द्वरा पठन की आवश्यक शर्तों पर चर्चा करना ।	पीपीटी, वीडियो, लेख, चार्ट, स्टिकी नोट, चार्ट पेपर

सत्र : 2	12:00PM - 01:00PM	**प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ना** - पठन विकास हेतु रणनीतियाँ	चर्चा व गतिविधियों द्वरा पठन रणनीतियों पर समझ बनाना।	पीपीटी, वीडियो, लेख, चार्ट,
लंच	01:00PM - 02:00PM			
गतिविधि	2:00PM – 2:15PM	Ice Breaking Activity		
सत्र : 3	2:15PM – 3:30PM	**प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ना** - पठन विकास हेतु रणनीतियाँ		पीपीटी, वीडियो, लेख, चार्ट,
सत्र : 4	3:30PM – 5:00PM	**प्रारंभिक कक्षाओं में लिखना** - लिखना क्या है और वर्तमान में करवाए जा रहे लेखन कार्य का एक विश्लेषण। - बुनियादी लेखन और उच्चस्तरीय लेखन के बीच संतुलन।	चर्चा व समूह कार्य द्वारा लेखन क्या व लेखन में संतुलन पर समझ बनाना।	लेख, गतिविधि पर्ची, वीडियो

दिवस : 5

सत्र	समय	सत्र का विषय	प्रक्रिया	सामग्री
सत्र : 0	9:30AM - 10:00AM	खेल गतिविधि एवं पिछले दिन की मुख्य बातों का क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा याद करना।	कुछ खेल गतिविधियाँ व क्विज/ प्रश्नों के द्वारा पिछले दिन के सत्र की मुख्य बातों को याद किया जाएगा व अगर कोई बिन्दु किसी प्रतिभागी को समझ नहीं आया हो तो उस पर समझ बनाना।	
सत्र : 1	10:00AM - 12:00PM	- प्रारंभिक कक्षाओं में लिखना। - लेखन विकास की रणनीतियों और गतिविधियों की समझ।	चर्चा व समूह कार्य द्वारा लेखन विकास की रणनीतियों और गतिविधियों की समझ बनाना।	लेख, गतिविधि पर्ची, वीडियो
सत्र : 2	12:00PM – 01:00PM	**अभी तक हुए सत्रों का पुनरावलोकन व समेकन**	क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा पूर्व सत्रों पर चर्चा व समेकन करना।	सभी सत्रों पर आधारित क्विज / प्रश्नों की पर्चियाँ

		- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान व निपुण भारत मिशन। - बहुभाषी शिक्षण - भाषा शिक्षण की संतुलित पद्धति		
लंच	01:00PM - 02:00PM			
गतिविधि	2:00PM – 2:15PM	Ice Breaking Activity		
सत्र : 3	2:15PM – 4:30PM	**अभी तक हुए सत्रों का पुनरावलोकन व समेकन** - मौखिक भाषा विकास - डिकोडिंग - प्रारंभिक कक्षाओं में पठन - प्रारंभिक कक्षाओं में लेखन	क्विज / प्रश्न पर्चियों द्वारा पूर्व सत्रों पर चर्चा व समेकन करना।	सभी सत्रों पर आधारित क्विज / प्रश्नों की पर्चियाँ
सत्र : 4	कार्यशाला समापन	- कार्यशाला पर प्रतिभागियों के फीडबैक - DEO / BEO द्वारा कार्यशाला का समापन	चर्चा / फीडबैक प्रपत्र द्वारा कार्यशाला का फीडबैक।	फीडबैक प्रपत्र

मॉड्यूल में प्रयुक्त आइकॉन :

जरा सोचिए

वीडियो

गतिविधि

ऑडियो

1. बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान एवं निपुण भारत मिशन

कुल समय – 4:40 घंटे

उद्देश्य :

- **NEP, 2020 के संदर्भ में निपुण भारत मिशन को समझना**
- **यह समझना कि बुनियादी कौशल क्या हैं और क्यों ज़रूरी हैं?**
- **मिशन के अनुसार, सीखने के प्रतिफल व लक्ष्य क्या हैं ?**
- **कोविड की स्थिति का प्रभाव व उस पर आगे काम कैसे किया जाए ?**

विषय	**FLN सेशन से परिचय**
समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**बच्चों में बुनियादी कौशलों से जुड़े अपने अनुभवों पर सोचना**
सामग्री	**समीना की कहानी - ऑडियो, पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	• सत्र के आरंभ में सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि ***"हम सभी बहुत से बच्चों को जानते हैं और हम सभी ने बहुत से बच्चों के साथ काम भी किया है।"*** तो अभी हम इस सत्र की शुरुआत एक ऐसी ही बच्ची समीना के साथ एक ऑडियो से करते हैं। समीना के बारे में सुनते समय **ध्यान दीजिए कि वह अपने दैनिक जीवन में क्या-क्या कर पाती है।** आप सभी इसे ध्यान से देखें और सुनें इसके बाद हम सब इस पर चर्चा करेंगे। • *सहजकर्ता* कक्षा 5 में पढ़ने वाली एक लड़की **समीना का उदाहरण ऑडियो व पीपीटी-FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 3** सभी प्रतिभागियों को दिखाएँ। **(इसमें दिखाया गया है कि किस तरह समीना अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत से काम करती है, जिसके लिए वह भाषा व संख्या ज्ञान के बुनियादी कौशलों का इस्तेमाल करती है।)** • ऑडियो और पीपीटी दिखाने के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से इस पर चर्चा करें - ▪ **सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें कि क्या आपकी कक्षा 5 के सभी बच्चे ये सभी काम कर सकते हैं ?** (यहाँ पर प्रतिभागियों की मिली-जुली प्रतिक्रिया होगी जैसे कुछ का जवाब **हाँ** तो कुछ का **ना** होगा साथ ही कुछ कामों के लिए प्रतिभागी ये भी कह सकते हैं कि ये काम बच्चे कर सकते हैं और ये काम नही कर सकते हैं।) • **सहजकर्ता इन जवाबों से जोड़ते हुए अगला प्रश्न करें कि यदि बच्चे ये सब काम नहीं कर पाते, तो क्यों** नही कर पाते ? (यहाँ प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया इस प्रकार हो सकती है कि कई बच्चों को पढ़ना नही आता है, हिसाब-किताब लगाना नही आता है, नाप-तोल नहीं आता है आदि।) • **सहजकर्ता इन बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखते रहें** और फिर इन बिन्दुओं की ओर इंगित करते हुए प्रतिभागियों से पूछें कि **अगर कक्षा 5 के बच्चे को यह सब नही आता है तो क्यों नही आता है** ?

	• **सहजकर्ता** सभी प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को बिन्दुवार बोर्ड पर लिखते रहें। (कुछ प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार से आ सकती हैं - पिछली कक्षाओं में बच्चों के साथ ठीक से काम नही हुआ होगा, घर पर पढ़ने का माहौल नही होगा, स्कूल का शिक्षण अच्छा नही होगा आदि।) ***(नोट-यदि परिवार या व्यवस्था से जुड़े मुद्दे उठते हैं तो उस पर ज़्यादा चर्चा नहीं की जाएगी व सम्मान पूर्वक कहा जाएगा कि हम सब स्कूल से जुड़े हैं, बच्चों के सीखने की मुख्य ज़िम्मेदारी स्कूल की है तो हम इसी संदर्भ में बात करेंगे कि स्कूल में क्या हो रहा होता है।)*** **अंत में सहजकर्ता इस चर्चा को समेकित करते हुए कहें कि -*जैसा कि आप सबने बताया, कुछ बच्चे इस तरह के काम कर पाते हैं, वहीं काफी बच्चे यह सब नहीं कर पाते। वे शुरुआती कक्षाओं में ही पढ़ने-लिखने और गणित के बुनियादी कौशल सीखने में सफल नहीं हो पाते। इन बुनियादी कौशलों के विकसित न होने पर ही वे आगे भी संघर्ष करते हैं। यदि कोई बच्चा एक सरल वाक्य पढ़ कर समझने या लिखने में संघर्ष करता है तो उसके लिए बड़ी कक्षाओं की किताबें पढ़ पाना, उनके साथ काम कर पाना, अपना कोई अनुभव लिख पाना आदि लगभग नामुमकिन है। इसी तरह, यदि 100 तक की गिनती की भी समझ नहीं है तो जोड़-घटा, गुणा-भाग कैसे हो पाएगा। ऐसे में, दैनिक जीवन में इनका उपयोग कर पाना तो बहुत दूर की बात है। भाषा और गणित के बुनियादी कौशल बच्चों के सीखने की नींव बनाते हैं इसलिए बहुत ज़रूरी है कि बुनियादी कौशल समय पर विकसित हो। इसी कारण से नई शिक्षा नीति में भी इन कौशलों पर बहुत महत्व दिया गया है।***

विषय	**NEP, 2020 के कुछ मुख्य बिंदु**
समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**NEP, 2020 के कुछ मुख्य बिंदु जानना**
सामग्री	**पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	**सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को पिछले सत्र से जोड़ते हुए कहें कि -** NEP 2020 मानती है कि 5 करोड़ बच्चों ने बुनियादी कौशल प्राप्त नहीं किए हैं व बच्चों के सीखने का स्तर बहुत कम हैं। सहजकर्ता **पीपीटी-FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड- 4** दिखाते हुए कहें कि कि **जैसा कि हम यहाँ शिक्षा नीति से लिए गए इस कथन में देख सकते हैं, यह नीति बुनियादी कौशलों को हासिल करना सर्वोच्च प्राथमिकता मानती है।** इन कौशलों को बहुत ही गंभीरता से लेते हुए शुरुआती कक्षाओं के लिए कुछ अहम बिन्दुओं को शामिल किया गया है। अब हम पीपीटी के माध्यम से देखते हैं कि ये अहम बिंदु क्या हैं : **सहजकर्ता पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 5-9** का उपयोग करते हुए, इन बिन्दुओं के बारे में प्रतिभागियों को बताएँ। वे पहले **स्लाईड 5** पर चारों बिन्दु दिखाएँ व फिर एक-एक कर अगली स्लाईड की मदद से सब पर चर्चा करें। • **3-9 वर्ष – Foundational stage या बुनियादी स्तर – स्लाइड 6**

- **यह नीति, कक्षा 1 से पहले के 3 साल से लेकर कक्षा 3 को एक स्तर foundational स्टेज** मानती है यानि कि **पूर्व प्राथमिक के 3 वर्ष व प्राथमिक स्कूल के शुरुआती 3 वर्षों** को शिक्षा व्यवस्था का foundational स्टेज या बुनियादी स्तर माना गया है।

(नोट - शिक्षा नीति में कक्षा 2 तक को फाउंडेशनल स्टेज में शामिल किया गया है। परंतु, निपुण भारत दिशानिर्देश मिशन में कक्षा 3 को भी फाउंडेशनल स्टेज का भाग माना गया है। क्योंकि निपुण भारत दिशानिर्देश बाद में आए हैं, इसलिए हम इसे फाइनल मानते हुए, पूर्व-प्राथमिक के 3 वर्ष से लेकर कक्षा 3 तक को फाउंडेशनल स्टेज में रखते हुए बात करेंगे।)

- **ECCE की व्यापक व गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था पर ज़ोर**
  - प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा (ECCE) को foundational स्टेज में शामिल किया गया है व इन सभी कक्षाओं में बच्चों के समग्र विकास पर काम करने पर ज़ोर दिया गया है।
  - यहाँ सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछें कि **ECCE पर इतना ज़ोर क्यों** दिया गया है ?
  - प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को शामिल करते हुए और **पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 7 की मदद से** सहजकर्ता समझाएँ कि शुरुआती वर्षों में मिलने वाले अनुभव बच्चों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। हम यहाँ मस्तिष्क का एक चित्र देख सकते हैं। **हमारे मस्तिष्क में लाखों न्यूरॉन्स होते हैं। इन न्यूरॉन्स का आपसी कनेक्शन या जुड़ाव जितना मजबूत होता है, उतना ही हमारा दिमाग कुशलता से काम करता है। शुरुआती वर्षों में यह जुड़ाव या neural connection बहुत तेजी से बनते हैं।** सब तरह के अनुभव जैसे कि माँ का स्पर्श, किसी कहानी को सुनाया जाना, भाषा के उपयोग, दूसरों के साथ जुड़ाव, सोच-विचार, कल्पना, आदि दिमाग में न्यूरॉन्स को एक-दूसरे से जोड़ने व जोड़ को मजबूत करने में मदद करते हैं। इसलिए, बच्चों को इन वर्षों में, पर्याप्त पोषण, सुरक्षा और देखभाल के साथ-साथ ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रूप से व खेल के जरिए सीखने का मौका दिया जाना आवश्यक है।
  - वह यह भी बताएँ कि वैश्विक शोध बताते हैं कि शुरुआती वर्षों में बच्चों के मस्तिष्क का विकास बहुत तेज़ी से होता है। 6 वर्ष की उम्र तक बच्चों के मस्तिष्क का लगभग 85% विकास हो जाता है।

- **बच्चों की भाषा का उपयोग – पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 8**
  - **सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को बताएँ कि नई शिक्षा नीति में बच्चों की घर की भाषा में शिक्षण पर ज़ोर दिया गया है।**
  - अभी हम सब हिन्दी में बात कर रहे हैं क्योंकि हम सभी इस भाषा से भली-भाँति परिचित हैं। पर यहीं यदि हम तमिल या मराठी भाषा में बात करने लगें तो हम में से अधिकतर लोग जो इन भाषाओं से परिचित नहीं है, उनके लिए बात समझ पाना बहुत कठिन होगा। इसी तरह, बच्चे जो केवल अपने घर-परिवार के अनुभव के साथ आते हैं, उनके लिए स्कूल की मानक भाषा समझ पाना व उसमें सीख पाना बहुत कठिन होता है।
  - इसलिए, यह नीति इस बात को बढ़ावा देती है कि बच्चों के सीखने के लिए उनके घर की भाषा का उपयोग किया जाए। बच्चे अपने घर की भाषा में ही बेहतर तरीके से सीखते -समझते हैं।
- **बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान के लिए अभियान – पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाईड 9**

	▪ यह नीति बुनियादी कौशलों को बहुत महत्वपूर्ण मानती है और इसलिए बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान (FLN) कौशलों पर एक अभियान की तरह काम करने की बात करती है। अभियान इसलिए कि हम सब को मिलकर इसपर काम करना है। समस्या से हम सब वर्षों से परिचित हैं, पर अब ये अति आवश्यक है कि व्यवस्था से जुड़े सभी लोग सचेत व जागरूक हों और इस पर काम करें। जैसे कि, हम सब स्वच्छता के महत्व से परिचित थे पर स्वच्छ भारत अभियान के रूप में आने पर सब लोग उसके प्रति सचेत हुए। ।

विषय	**निपुण भारत मिशन से परिचय**
समय	**1 घंटा**
उद्देश्य	**निपुण भारत मिशन के बारे में जानना**
सामग्री	**पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	● **सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से** कहें हम सबने एक सत्र में समीना के बारे में सुना। क्या हम सब भी चाहते हैं कि हमारे सब बच्चे भी समीना की तरह सब काम कर पाएँ। ● सहजकर्ता यहाँ प्रतिभागियों से **हाँ** के जवाब की अपेक्षा करेंगे। ● इसके बाद, कहेंगे कि परंतु, पिछले सत्र में सबने बताया कि बहुत से बच्चे ऐसा नहीं कर पाते। आइए, देखते हैं कि NAS, 2017 के छतीसगढ़ राज्य के आँकड़ें इस बारे में क्या कहते हैं। **NAS, 2017 के आँकड़ों पर चर्चा और मिशन की आवश्यकता को समझना** ● सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की **स्लाइड 10** से NAS के आँकड़ें दिखाएँ। आँकड़ें दिखाते हुए सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें कि आप इन आँकड़ों को देखकर क्या निष्कर्ष निकालते हैं ? ● अधिकतर प्रतिभागी इस पर अपनी प्रतिक्रिया इन दो बिन्दुओं से देंगे। ● **एक बड़ी संख्या में बच्चे बुनियादी कौशल नहीं जानते।** ● **बच्चों के प्रदर्शन का स्तर बड़ी कक्षा में जाने पर और कम हो जाता है।** ● **सहजकर्ता प्रतिभागियों का ध्यान इस ओर ले जाएँ कि एक बड़ी संख्या में बच्चे सरल पाठ पढ़ने में भी सक्षम नहीं है और कक्षा 3 से कक्षा 5 में न पढ़ पाने वाले बच्चों का प्रतिशत बढ़ गया है। गणित में भी यही हुआ है।** ● सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें कि आपके अनुसार इसके क्या कारण हो सकते हैं? **(अपेक्षाओं का बढ़ना व बच्चों का कौशलों पर अच्छी पकड़ न होना।) -** सहजकर्ता इस पर दो तीन प्रतिभागियों के मत जानने का प्रयास करें। ● **अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि जिस प्रकार से NAS – छत्तीसगढ़ के आँकड़ें हैं उसी प्रकार से अन्य राज्यों के भी आँकड़ें हैं। अधिकतर राज्यों में बच्चों के सीखें के स्तर कम हैं। जिस वजह से निपुण - भारत मिशन की आवश्यकता पड़ी है। हमारे सभी बच्चे बुनियादी**

कौशलों में निपुणता हासिल कर पाएँ, इसके लिए आवश्यक है कि हम इस मिशन पर मिलकर काम करें।

मिशन से जुड़े मुख्य बिंदु

- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अभी तक हम सभी ने इस मिशन के बारे में बहुत सी बातें की हैं और आप लोग पहले से भी इसके बारे में जानते हैं। तो अब हम एक प्रश्नोत्तरी करते हैं जो इस मिशन पर ही आधारित है। इसके लिए मैं आप सभी को पीपीटी के द्वारा कुछ प्रश्न दिखाऊँगा / दिखाऊँगी आपको उसका जवाब अपने पेपर में **10 सेकेंड** मे लिख लेना है।

इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 11-13** से बारी-बारी से सभी प्रश्न दिखाएँ और प्रत्येक प्रश्न के जवाब के बाद 10 सेकेंड का समय उत्तर लिखने के लिए दें।

(नोट – इस गतिविधि को करवाते समय सहजकर्ता टाइम के लिए timer का उपयोग करें और साथ ही ये भी ध्यान रखें कि गतिविधि के प्रति प्रतिभागियों में उत्साह और उत्सुकता बनी रहे।)

क्विज़ – प्रश्न व उनके सही जवाब हैं:

1. **निपुण भारत मिशन किस आयु वर्ग के बच्चों पर केंद्रित है ?**
   उत्तर- 3-9 वर्ष
2. **2. निपुण भारत मिशन का लक्ष्य किस वर्ष तक पूरा करना है ?**
   उत्तर- 2026-27 तक
3. 3. **निपुण भारत मिशन किन कौशलों पर केंद्रित है, सबसे उपयुक्त विकल्प चुनिए :**
   उत्तर- बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान कौशलों पर
4. **4. निपुण भारत मिशन में किन कक्षाओं को शामिल किया गया है :**
   उत्तर- पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं से कक्षा 3 तक
5. **5. निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की ज़िम्मेदारी होगी ?**
   उत्तर- केन्द्रीय व राज्य स्तरीय शिक्षा विभाग व संस्थाओं, जिला व ब्लॉक अधिकारी, CAC, शिक्षकों, SMC की (प्राथमिक शिक्षा से जुड़े सभी लोगों की जिम्मेदारी व मिलकर काम करने पर जोर दिया गया है।)
6. **6. मिशन के बारे में सबसे उपयुक्त कथन चुनिए:**
   उत्तर- यह मिशन तय करने में महत्वपूर्ण है कि बच्चों को आगे के सीखने के लिए मज़बूत बुनियाद मिले

- **इस प्रश्नोतरी के पूरा होने पर सहजकर्ता पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 14 के माध्यम से निपुण भारत मिशन के मुख्य बिंदुओं को समेकित करें।**
  - Nipun भारत - **National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy** यानी कि बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का राष्ट्रीय मिशन
  - *राष्ट्रीय पहल – इसका लक्ष्य है कि 2026-27 के अंत तक कक्षा 3 के अंत तक, बच्चे बुनियादी कौशलों में निपुणता हासिल कर लें।*
  - पूर्व-प्राथमिक के तीनों वर्षों से लेकर कक्षा 3 तक

	▪ 3-9 वर्ष के आयु वर्ग के लिए ▪ लक्ष्य कब तक प्राप्त किया जाना है ? - 2026-27 ▪ इस मिशन की सफलता के लिए आवश्यक है कि सभी स्तरों पर, शुरुआती कक्षाओं से जुड़े सभी लोग इस पर मिलकर काम करें।

विषय	**बुनियादी साक्षरता व बुनियादी संख्या ज्ञान क्या है ?**
समय	**40 मिनट**
उद्देश्य	**यह समझना कि बुनियादी साक्षरता व बुनियादी संख्या ज्ञान क्या है ?**
सामग्री	**स्टिकी नोट, चार्ट पेपर, पेन, पीपीटी, audio, कक्षा 5 गणित पुस्तक**
प्रक्रिया का विवरण	**गतिविधि -** ● सहजकर्ता **बुनियादी साक्षरता** क्या है व **बुनियादी संख्या** ज्ञान क्या है ? इन दोनों विषयों को दो अलग-अलग चार्ट पर लिखकर कार्यशाला के कक्ष मे दो अलग अलग जगह पर लगा दें। ● अब सभी प्रतिभागियों से कहें कि यहाँ दो चार्ट लगें हैं आपके अनुसार इनमें कौन से कौशल शामिल हैं, यह सब आपको एक-एक स्लिप पर लिखकर चार्ट पर लगाना है। (इसके लिए सहजकर्ता सभी को 10 मिनिट का समय दें।) ● जब सभी अपनी-अपनी स्लिप लगा चुके हों, तो सहजकर्ता किसी एक प्रतिभागी को बुलाकर **बुनियादी साक्षरता वाले चार्ट** में आए जवाब पढने के लिए कहें। ● सहजकर्ता पढ़े गए बिन्दुओं को समेकित करते हुए सभी प्रतिभागियों को कहें कि अब हम इसे और बेहतर रूप से समझने के लिए पीपीटी से जानने का प्रयास करते हैं। ● सहजकर्ता **पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 16 के माध्यम से** सहजकर्ता **बुनियादी साक्षरता क्या है को समझाएँ।** **बुनियादी साक्षरता के कौशल बच्चों के सीखने की आधारशिला प्रदान करते हैं।** **मौखिक भाषा का विकास** समझ के साथ सुनना, दूसरों के साथ विभिन्न उद्देश्यों के लिए बातचीत में जुड़ना व स्वयं को अभिव्यक्त करना, सोच-विचार **ध्वनि बोध व डिकोडिंग** भाषा की ध्वनियों को पहचानना व उन्हें अक्षरों से जोड़ना, अक्षर-ध्वनि संबंध व प्रिंट के ज्ञान का उपयोग करते हुए शब्द पहचानना **पठन** धाराप्रवाह रूप से यानि सटीकता, गति, भाव, समझ के साथ पढ़ना और पाठ की गहरी समझ बनाना- अर्थ निर्माण, विश्लेषण करना, अनुमान लगाना, निष्कर्ष निकालना, आदि **लेखन** लिखित रूप में स्वयं को अभिव्यक्त कर पाना – जैसे- कि किसी अनुभव, विचार को चित्रों, शब्दों, वाक्यों में लिख पाना

- जब सहजकर्ता **बुनियादी साक्षरता** पर चर्चा कर चुके तब सहजकर्ता किसी अन्य प्रतिभागी को बुलाकर उससे **बुनियादी संख्या ज्ञान** वाले चार्ट में आए जवाब पढने के लिए कहें।
- सहजकर्ता पढ़े गए बिन्दुओं को समेकित करते हुए सभी प्रतिभागियों को **पीपीटी- FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 17-18 के माध्यम से** सहजकर्ता **बुनियादी संख्या** ज्ञान क्या है **को समझाएँ।**

बुनियादी संख्या ज्ञान से तात्पर्य तार्किक चिंतन व दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए गणितीय कौशलों के प्रयोग से है।

संख्या पूर्व अवधारणाएँ वर्गीकरण, एक-एक की संगति, वस्तुओं को क्रम में लगाना, उनकी तुलना करना, छोटा-बड़ा, आदि	**संख्या ज्ञान व संक्रियाएँ** संख्याओं की गहरी समझ – मात्रा, स्थानीय मान, तुलना, क्रम, जोड़, घटा, गुणा, भाग व दैनिक जीवन में उपयोग
आकृतियाँ व स्थानिक समझ आकार, दिशा, स्थान के संदर्भ में अपनी दुनिया को समझना, 2-D व 3-D आकारों को समझना	**मापन** दैनिक जीवन के संदर्भ में वस्तुओं की लंबाई, वजन, धारिता, ताप और समय को मापना
पैटर्न वस्तुओं, आकारों, अंकों, आदि से बने विभिन्न पैटर्न को समझना, विस्तार करना, नए पैटर्न बनाना व उनका नियम व्यक्त करना	**आँकड़ों को व्यवस्थित करना** सामान्य जीवन से जुड़े आँकड़ों को जुटाना, प्रस्तुत करना, विश्लेषण करना
गणितीय संप्रेषण गणितीय भाषा से जुड़ी शब्दावली, प्रतीकों का प्रयोग कर पाना, जैसे कि जोड़, गुणा के चिन्ह का उपयोग करना	**गणितीय सोच व कौशल** तर्क देना, सामान्यीकरण, समस्या समाधान, अनुमान लगाना, आदि का विकास व दैनिक जीवन में उपयोग

गणितीय सोच का उदाहरण –

1. एक carpenter यह अनुमान लगाता है कि एक खास size के मेज़ बनाने के लिए उसे कितनी लकड़ी चाहिए और कितना समय लगेगा।
2. एक बच्चा 48 रुपए की किताब और 42 रुपए का खिलौना लेना चाहता है। वे यह कह कर 100 रुपए माँगता है कि दोनों 50 से कम हैं और 50+50 =100 होता है तो 100 रुपए में वो आसानी से यह खरीद सकता है और चॉकलेट लेने के लिए भी पैसे बच जाएँगे।

- यहाँ हम देख सकते हैं कि गणितीय समझ, तर्क-वितर्क, अनुमान लगाने, जैसे कौशलों का उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए किया जा रहा है। यही गणितीय सोच है। गणितीय सोच को विकसित करने गणित का मुख्य उद्देश्य है जिससे बच्चे अपने जीवन में गणितीय समझ, तर्कशील चिंतन का उपयोग करें। यह सभी गणितीय अवधारणाओं का भाग है।

बुनियादी कौशलों में निपुणता हासिल करने की आवश्यकता

- इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अभी हमने **बुनियादी** साक्षरता व **बुनियादी** संख्या ज्ञान क्या है को समझा। अब हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि बच्चों को यह कौशल किस स्तर पर हासिल करने हैं, और क्यों ? इसके लिए हम पहले दो ऑडियो सुनेंगे।
- सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 19 के माध्यम** से 2 बच्चों के पठन का ऑडियो सुनाएँ।
- इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से निम्न बिन्दुओं के आधार पर **चर्चा** करें -

1-क्या दोनों बच्चे एक सा पढ़ पाए ?
2-क्या अंतर था ?
3-कौन सा बच्चा पाठ समझ पाया होगा ? (अमन)
4-आपके अनुसार, कक्षा 3 के अंत तक बच्चे को किस स्तर पर पढ़ना आना चाहिए।

- सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को बोर्ड पर लिखें और उन्हे समेकित करते हुए बताएँ कि बातचीत में देखा गया कि अमन ही पाठ को समझ पाया। आपने भी यह देखा होगा वही बच्चे पढ़कर समझने में समर्थ होते हैं जो प्रवाह के साथ पढ़ पा रहे हैं। हिज्जे कर के पढ़ने पर बच्चे पाठ की समझ नहीं बना पाते। किसी भी पाठ को समझ पाने के लिए ज़रूरी है कि प्रवाहपूर्ण रूप से पढ़ा जाए। इसलिए, **जब हम कहते हैं कि बच्चे कक्षा 3 के अंत तक पढ़ना सीख जाएँ तो हम मानते हैं कि बच्चे प्रवाह व समझ के साथ पढ़ पाएँ यानी वे पढ़ने में निपुण हों। तभी वे, पठन कौशल का उपयोग कर अन्य विषयों को पढ़कर समझ सकते हैं। यही बात अन्य सभी बुनियादी कौशलों पर भी लागू होती है। बच्चों का इन सभी कौशलों में निपुणता हासिल करना ज़रूरी है।**
- **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 20** पर **कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक का उदाहरण दिखाते हुए,** यह बताएँ कि बड़ी कक्षाओं में काम कठिन व अमूर्त होता है - इस तरह के काम कर पाने के लिए बच्चों को समझ के साथ पढ़ना, अपनी बात लिख पाना, संख्याओं की समझ, तर्क-वितर्क कर पाना, आदि आना अनिवार्य हैं। बच्चे नया सीखने के लिए इन कौशलों का उपयोग तभी कर सकते हैं, जब उन्हें इन कौशलों में निपुणता हों। जिस तरह हम सहारे के साथ साइकिल चला पाने पर यह नहीं मानते हैं। हमें साइकिल चलाना आ गया है। उसी तरह, रुक-रुक या प्रयत्न के साथ पढ़ पाना निपुणता नहीं माना जा सकता। हम साइकिल चला पाने में निपुणता तभी मानते हैं जब हम अलग-अलग तरह के रास्तों पर आराम से चल पाएँ। इसी तरह, कौशलों पर पकड़ इतनी मजबूत होनी चाहिए कि बाकी सब सीखने के लिए इनका इस्तेमाल कर पाएँ।

विषय	**बुनियादी कौशल क्यों आवश्यक है ?**
समय	**40 मिनट**
उद्देश्य	**प्रतिभागी बुनियादी कौशल की आवश्यकता / जरूरत को समझ पाएंगे।**
सामग्री	**चार्ट पेपर, स्केच पेन, हैंड आउट**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अभी तक हमनें बुनियादी कौशल क्या है और इसमें क्या-क्या क्षमताएँ शामिल है को समझा। **हमने देखा कि इन पर बहुत महत्व दिया गया है। आपको क्या लगता है इन्हें इतना महत्व क्यों दिया गया है ? सभी बच्चों का ये कौशल हासिल करना इतना आवश्यक क्यों हैं ? और यह इन्ही वर्षों में होना क्यों ज़रूरी है ?** • प्रतिभागियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं के मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखें। • अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को 5 समूहों में विभाजित कर दें। • समूह विभाजन के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को कहें अब मैं आप सभी को एक हैंड आउट पढ़ने के लिए दूँगा / दूँगी आप सभी को उसको पढ़कर ये समझना है कि बुनियादी कौशल क्यों आवश्यक हैं ,उसमें कौन कौन से बिन्दु प्रभाव डालते हैं आदि। • इसके बाद सहजकर्ता सभी समूहों को **हैंड-आउट बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान का महत्व** पढ़ने के लिए दें। **प्रत्येक समूह को किसी एक बिंदु को ध्यान से पढ़कर उस पर अपनी प्रस्तुति देनी है और दूसरों को समझाना है**। सहजकर्ता प्रस्तुति के लिए, हैंड-आउट का विभाजन इस प्रकार से कर सकते हैं। **समूह-1 - बुनियादी कौशल सीखने व बेहतर जीवन की नींव** **समूह-2-बुनियादी कौशल अकादमिक उपलब्धि के लिए आवश्यक** **समूह-3- शुरुआती वर्षों का महत्व** **समूह-4-सीखने में मैथ्यू प्रभाव** **समूह-5- सीखने में समता** ***(नोट- यहाँ पर सहजकर्ता को ध्यान रखना होगा कि किसी भी समूह में पाँच-छह से अधिक व्यक्ति न हो अगर ऐसा होता है तो समूहों कि संख्या को बढ़ाकर किन्ही दो समूहों को समान बिन्दुओं पर प्रस्तुति के लिए कहा जा सकता है।)*** सहजकर्ता हैंड-आउट को पढ़ने व समूह में काम करने के लिए सभी को 10 मिनिट का समय दें। ▪ सभी के समूहों में काम कर लेने के बाद सहजकर्ता सभी समूहों को बारी-बारी से मंच पर बुलाकर उनका प्रस्तुतिकरण करवाएँ। ▪ जब सभी की प्रस्तुति हो जाएँ तो सहजकर्ता मुख्य बिन्दुओं को समलित करते हुए पीपीटी **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 21** से इस सत्र का समेकन करें।

विषय	**सीखने के प्रतिफल व लक्ष्य**
समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**मिशन के अनुसार, सीखने के प्रतिफल व लक्ष्य क्या हैं ?**
सामग्री	**पीपीटी, लक्ष्य सूची प्रिन्ट, प्रतिफल उदाहरण,चार्ट पेपर, फेविकोल**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से बात करें कि बच्चों के सीखने के लिए ज़रूरी है कि हम इन कौशलों पर एक क्रमवार रूप से काम करें। इसके लिए, मिशन द्वारा सीखने के प्रतिफल (learning outcomes) दिए गए हैं। ये प्रतिफल, बच्चों द्वारा, प्रत्येक कक्षा में प्राप्त की जाने वाली विभिन्न दक्षताओं को दिखाते हैं। ज़रूरी है कि इन प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाए। साथ ही, सतत आकलन के ज़रिए देखा जाए कि बच्चे किन प्रतिफलों को सीख पा रहे हैं व किन प्रतिफलों को सीख पाने के लिए, उन्हें और सहयोग की ज़रूरत है। • क्या आप जानते हैं कि ये प्रतिफल क्या हैं। (यहाँ हो सकता है की कुछ प्रतिभागी कुछ प्रतिफलों को बता पाएँ।) • सहजकर्ता इस प्रतिफलों को शामिल करते हुए सभी प्रतिभागियों से कहें की आइए, इन्हें हम और बेहतर रूप से समझने का प्रयास करते हैं। • इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 22-23** को दिखाते हुए निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें। • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **बताएँ** कि मिशन में बच्चों के **समग्र विकास पर ध्यान** केंद्रित किया गया है। इसलिए, विकास के सभी क्षेत्रों से जुड़ी दक्षताओं के लिए सीखने के प्रतिफल दिए गए हैं। • **विकासात्मक लक्ष्य** - बताया जाएगा कि बच्चों के सीखने के प्रतिफल, 3 विकासात्मक लक्ष्यों से जोड़े गए हैं, जो बच्चों के समग्र विकास को दिखाते हैं। ➔ **पहला लक्ष्य** - बच्चों का स्वास्थ्य व सेहत बेहतर रहे । यह लक्ष्य बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास, शारीरिक विकास व सेहत से जुड़ा है । इसमें शामिल कुछ दक्षताएँ हैं, जैसे कि - आत्म-विश्वास विकसित होना, दूसरों के साथ सामाजिक रूप से जुड़ना, जैसे कि, खेलना व अपनी बारी का इंतज़ार करना, स्वच्छता बनाए रखना, समस्याओं को सुलझा पाना, फाइन व ग्रोस मोटर कौशलों का विकास, आदि। ➔ **दूसरा लक्ष्य** - प्रभावी संप्रेषणकर्ता बनना - इसमें भाषाई विकास से जुड़ी दक्षताएँ शामिल हैं, जैसे कि - मौखिक अभिव्यक्ति, समझ के साथ पढ़ पाना, लिखित में अपनी बात कहना। ➔ **तीसरा लक्ष्य** - बच्चों की सीखने में भागीदारी हो तथा उनका अपने परिवेश से जुड़ाव हो - इसमें संज्ञानतमक विकास से जुड़े दक्षताएँ शामिल हैं, जैसे कि - वर्गीकरण कर पाना, अपने पर्यावरण के विभिन्न आयामों का अवलोकन करना, तार्किक चिंतन, संख्याओं व आकृतियों की समझ, आदि। • **अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि** इन तीनों ही लक्ष्यों के अंतर्गत, संबंधित दक्षताओं से जुड़े प्रतिफल दिए गए हैं जो क्रमवार रूप से बच्चों द्वारा प्राप्त की जाने वाली दक्षताओं को दिखाते हैं। • इसके बाद, **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 24** पर पठन से जुड़े एक प्रतिफल का उदाहरण को दिखाते हुए सहजकर्ता यह बताएँ कि किस तरह ये एक कक्षा से दूसरी कक्षा में एक क्रम में बढ़ते हैं

। इसलिए, देखना ज़रूरी होता है कि बच्चा किस स्तर तक कौशल को समझता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे सीधे कक्षा 1 में आ रहे हैं और पूर्व-प्राथमिक वर्षों के अनुभव नहीं मिले हैं तो उन्हें शुरुआती समय में, इन कक्षाओं से जुड़े मुख्य कौशलों को सीखने के अनुभव देने होंगे। इसी तरह, यदि कक्षा 2 और 3 में आने वाले बच्चे पहले का नहीं जानते हैं तो उनके साथ भी पिछले वर्ष के कौशलों पर काम करते हुए आगे बढ़ना होगा।

नोट – यहाँ सहजकर्ता बताएँ कि – पूर्व-प्राथमिक वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं परंतु, अभी भी हमारे देश में ECCE सेवाएँ गुणवत्तापूर्ण नहीं हैं। NEP, 2020 का लक्ष्य है कि 2030 तक सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण ECCE मिल पाए। इसलिए, संभव है कि हमारी कक्षाओं में आने वाले बहुत से बच्चे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के समृद्ध अनुभवों के साथ न आ रहे हों। इसलिए, एक अंतरिम उपाय के रुप में, NCERT द्वारा 3 महीने का एक मॉड्यूल तैयार किया गया है। 'विद्या प्रवेश' नाम के इस मॉड्यूल का उपयोग कक्षा 1 के पहले 3 महीनों में किया जाना है। इसका उद्देश्य खेल-गतिविधियों के जरिए बच्चों के साथ पूर्व-प्राथमिक वर्षों से जुड़ी विभिन्न दक्षताओं पर काम करना है। जैसे कि, कविताओं व कहानियों को सुनना, उन पर बात करना, ध्वनि-जागरूकता से जुड़े खेल, वस्तुओं को रंग, आकार के अनुसार वर्गीकृत करना, कक्षा में सहज होना, आदि। यह बच्चों को कक्षा 1 के पाठ्यक्रम से बेहतर रुप से जुडने में मदद करेगा।

- सहजकर्ता प्रतिभागियों से **पूछें कि इन प्रतिफलों का कक्षा में क्या उपयोग है ?**
- सहजकर्ता प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया को समलित करते हुए बताएं कि **ये प्रतिफल, बच्चों द्वारा, प्रत्येक कक्षा में प्राप्त की जाने वाली विभिन्न दक्षताओं को दिखाते हैं। इसलिए, ज़रूरी है कि इन प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाए। साथ ही, सतत आकलन के ज़रिए देखा जाए कि बच्चे किन प्रतिफलों को सीख पा रहे हैं व किन प्रतिफलों को सीख पाने के लिए, उन्हें और सहयोग की ज़रूरत है।**
- सहजकर्ता प्रतिभागियों को **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 25** दिखाते हुए बताएँ कि मिशन द्वारा एक लक्ष्य सूची भी दी गई है, जो भाषा व गणित के लिए दिए गए प्रतिफलों का सार दिखाती है। यह दिखाती है कि बालवाटिका से लेकर कक्षा 3 के अंत तक, हर वर्ष बच्चे क्या करने में सक्षम होने चाहिए। यह लक्ष्य सूची एक आम व्यक्ति को भी यह समझने में मददगार है कि कक्षा के अंत में बच्चों को भाषा और गणित में क्या-क्या आ जाना चाहिए। वहीं, सीखने के प्रतिफल इससे अलग हैं, जो हमें विस्तार से समझने में मदद करते हैं कि प्रत्येक दक्षता को हासिल करने के लिए किन-किन छोटे कौशलों पर क्रम में काम करना होगा।
- सहजकर्ता **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 26 -28** पर कक्षा 3 के भाषा के लक्ष्य दिखाकर चर्चा करें, कि इनमें क्या-क्या शामिल है।
- इसके बाद, सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को 2-2 के जोड़ों में लक्ष्य सूची देखने को दें, जिसमें वे देख सकें कि किस कक्षा में क्या अपेक्षित है। उन्हें ध्यान देने के लिए कहें कि कैसे यह एक क्रम में आगे बढ़ रहे हैं। इसके लिए 10 मिनट का समय दे।
- सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से प्रतिफलों व लक्ष्य सूची पर अपने विचार / प्रश्न आदि साझा करने के लिए कहें। **(यहाँ, विचारों व प्रश्नों को स्वीकार करते हुए, सहजकर्ता आवश्यकता अनुसार**

	संबंधित बिंदु को स्पष्ट करें। यहाँ, संभव है कि कुछ प्रश्न/विचार व्यवस्था से जुड़े हों अथवा इस सत्र के दायरे से बाहर हों, ऐसे में उन्हें विनम्रता से बाद के विचार-विमर्श के लिए छोड़ा जा सकता है।) यहाँ संभव है कि कुछ प्रतिभागी कोविड की स्थिति और कुछ कठिन लक्ष्यों जैसे कि पठन 60 शब्द प्रति मिनट की बात करें। ऐसे में, सहजकर्ता इस बात को स्वीकार करते हुए चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बात करें कि कुछ लक्ष्य वर्तमान स्थिति के संदर्भ में बहुत कठिन है। **हमें ध्यान रखना होगा कि यह 2026-27 तक एक व्यवस्थागत तरीके से काम करने पर प्राप्त किया जाना है। अभी एक दो वर्ष में यह अपेक्षित नहीं है। इसलिए, बच्चों व शिक्षकों पर एकदम से यहाँ तक आ जाने का दबाव बनाना उचित नहीं होगा। यह हम कुछ दिनों या महीनों में नहीं कर सकते, हमें समय के साथ व्यवस्थागत रूप से काम करना होगा, जिससे धीरे-धीरे यह बदलाव लाया जा सके।**

विषय	**कोविड के कारण स्कूल बंद होने से पड़े प्रभाव और आगे की योजना**
समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**यह समझना कि कोविड के कारण स्कूल बंद होने से पड़े प्रभाव और आगे की योजना के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाए**
सामग्री	**पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि जैसा आप सबने बताया बच्चों के सीखने के स्तर इस समय बहुत कम हैं। और इसमें कोविड महामारी के कारण स्कूल लंबे समय तक बंद रहने की भी बड़ी भूमिका है तो क्या आप बता सकते हैं कि ➢ **आपने अपने आस-पास के बच्चों पर कोविड का व स्कूल बंद रहने का क्या प्रभाव देखा है ?** ➢ उनकी सेहत, भावनात्मक स्थिति व सीखने पर ? ➢ क्या वे सब इस दौरान अच्छे से सीख पाए ? ➢ क्या वे सब कक्षा अनुरूप सीखने के उचित स्तर पर हैं ? • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को बोर्ड पर लिखते रहें। • इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को आधार बनाते हुए व **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड 29** दिखाते हुए बात करें दुनिया भर में **कई ऐसे शोध हुए हैं, जो दिखाते हैं कि बच्चों के सीखने का बहुत नुकसान हुआ है।** जहाँ कुछ शोध ये बताते हैं कि बड़ी संख्या में बच्चे डिजिटल माध्यमों, online कक्षाओं से वंचित रहे। वहीं, कुछ शोध ये भी बताते हैं कि ये तरीके (ऑनलाइन कक्षाएं) बहुत कारगर नहीं रहे और दोनों ही स्थितियों में बच्चों के सीखने में कमी देखी गई। यहाँ हम ऐसे ही दो शोधों में देखे गए कुछ मुख्य बिन्दु देख सकते हैं। यह शोध 2021 में 5-6 राज्यों में किए गए हैं।

- संभव है कि आपने भी अपने स्कूल में इस स्थिति को देखा होगा। यदि कोई बच्चा मार्च 2019 में कक्षा-1 में अध्ययन था तो वही बच्चा अब कक्षा-3 में तो है परंतु सीखने के अनुभव के अभाव में उसके सीखने का स्तर कक्षा- 3 के अपेक्षाओं से बहुत कम होगा।
- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि आपके अनुसार ऐसे में, क्या जब बच्चे स्कूल वापस आ रहे हैं तो हम उनके साथ उसी कक्षा के प्रतिफलों पर काम कर सकते हैं जिसमें वो आ रहे हैं ? क्या ये उचित होगा ? (**यहाँ अधिकतर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया नहीं में होगी।**)
- **अब सहजकर्ता पूछें कि फिर हमें क्या या कैसे काम करना चाहिए ?**

(यहाँ अधिकतर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया होगी कि हमें पिछली कक्षाओं में भूले गए कौशलों पर काम कराना होगा।)

- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड -31** दिखाते हुए चर्चा करें -
- सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि सही,ऐसे में बच्चों से स्कूल खुलते ही कक्षा-3 के प्रतिफलों पर काम करना सही नहीं होगा। हमें पिछली कक्षाओं में छूटे/भूले गए कौशलों पर काम कराते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा। इसलिए आवश्यकता है कि हम इस स्थिति को समझते हुए आगे कि योजना बनाएँ।
- बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है - इसलिए **उन्हें सहज करना व उनके साथ जुड़ाव बनाना प्राथमिकता** पर होना चाहिए।
- **सीखने के स्तर को समझना** - बच्चों के साथ काम करते हुए व आकलन के ज़रिए समझना कि उनका सीखने का स्तर क्या है ?
- **पिछली कक्षा के आवश्यक प्रतिफलों पर काम करते हुए क्रमवार रूप से आगे बढ़ना**
- हमें **ये अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि बच्चे एक ही वर्ष में सारा छूटा हुआ सीखकर, कक्षा के प्रतिफल प्राप्त कर लेंगे,** परंतु उनके **स्तर के अनुसार योजना बनाना** व वर्ष के लिए उचित प्रतिफल चुनना होगा।
- हमें ये साझी समझ बनानी होगी कि **बच्चों के सीखने को प्राथमिकता पर दिए जाने की ज़रूरत है न कि कक्षा का पाठ्यक्रम पूरा करने की** जिससे कि, सभी निश्चित होकर बच्चों के समग्र विकास और बुनियादी कौशलों पर काम कर पाएँ। साथ ही, इसके लिए आवश्यक क्षमताओं का विकास करना जैसे कि सतत आकलन के माध्यम से स्तर को समझने, प्रभावी प्रक्रियाओं का उपयोग, करना होगा।

साथियों हमने देखा कि किस तरह से कोविड महामारी में नुकसान कि भरपाई हेतु हमें पूरी सतर्कता और सुनियोजित तरीके से आगे की कार्यविधि अपनानी होगी। वर्तमान स्थिति में भी जो बच्चे स्कूलो में लौट आए हैं वे भी कई वर्षों तक महामारी के कारण पढ़ाई में हुए नुकसान से जूझते रहेंगे क्योंकि जो भी सीखे हुए कौशल थे उन्हें भूल चुके हैं। नया कुछ सीखने के लिए उन्हें काफी समस्या आ रही है। हमें न केवल छूटे हुए प्रतिफलों पर काम करना होगा बल्कि सीखने के प्रभावी तरीके भी अपनाने होंगे, जिससे बच्चे कक्षा से जुड़ाव महसूस करें और अच्छे से सीख पाएँ।

विषय	**समेकन - FLN**
समय	**20 मिनट**
उद्देश्य	**सत्र के कुछ मुख्य बिन्दुओं से जुड़ी अपनी समझ को व्यक्त करना**
सामग्री	**चार्ट पेपर, पेन, पीपीटी, प्रश्नों की पर्चियाँ**
प्रक्रिया का विवरण	 • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अभी तक हमने FLN मिशन पर बहुत सी चर्चा की अब हम एक गतिविधि करेंगे। • सहजकर्ता निम्न 5 प्रश्नों की पर्चियाँ गतिविधि से पूर्व ही बना लें। ▪ ***निपुण भारत मिशन क्या है व क्यों महत्वपूर्ण है ?*** ▪ ***बुनियादी कौशलों में कौन से कौशल शामिल हैं*** ▪ ***बुनियादी कौशल क्यों ज़रूरी हैं ?*** ▪ ***कोविड के चलते लंबे समय तक स्कूल बंद रहने के बाद, अब स्कूल खुलने पर हमें किन बातों का ध्यान रखना होगा ?*** ▪ ***पूर्व-प्राथमिक वर्ष क्यों महत्वपूर्ण हैं ? इनके लिए निपुण भारत मिशन में किए गए कुछ प्रावधान बताइए।*** • अब सहजकर्ता प्रत्येक समूह को एक पर्ची चुनने को कहें व उस पर दिए प्रश्न का जवाब, कुछ बिंदुओं में लिखने के लिए कहें। • प्रतिभागियों के लिख लेने के बाद, उनके जवाब को दीवार पर लगाकर प्रदर्शित करें। • अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को **FLN व निपुण भारत मिशन की स्लाइड -32** दिखाते हुए सत्र के मुख्य बिंदु बताएँ।

2. बहुभाषी शिक्षण

कुल समय – 4 घंटे
उद्देश्य :

- **शिक्षा में बच्चों की भाषा के महत्व को समझना।**
- **बहुभाषी शिक्षा के कानूनी प्रावधानों को समझना।**
- **बहुभाषी शिक्षा की समझ का विकास करना।**
- **बच्चों की भाषा को शिक्षा में शामिल करने के तरीकों को समझना।**

सत्र	**बच्चे की भाषा महत्वपूर्ण क्यों है?**
समय	**90 मिनट**
उद्देश्य	**बच्चों की भाषा को उनकी शिक्षा में शामिल करने की आवश्यकता समझना।**
सामग्री	**एकल भाषी और बहुभाषी कक्षा की तुलना का विडियो, QR Code, हैंडआउट 1-बच्चों के घर की भाषा के उपयोग का महत्व**
प्रक्रिया का विवरण	• सत्र के प्रारंभ में प्रतिभागियों को एक विडियो दिखाया जाएगा। QR Code: • विडियो देखने के बाद प्रतिभागियों से दो प्रश्न किए जाएंगे: ▪ दोनों कक्षाओं में आपने क्या अंतर देखे? ▪ किस कक्षा में बच्चे सक्रिय रूप से कार्य कर रहे थे? इसके क्या कारण हो सकते हैं? • चर्चा के बिन्दुओं को सहजकर्ता द्वारा बोर्ड पर लिखा जाएगा, और चर्चा के बाद निम्न बिंदुओं पर समेकन किया जाएगा: ▪ एकल भाषी कक्षा में केवल स्कूल की भाषा का उपयोग हो रहा है, जबकि बहुभाषी कक्षा में शिक्षक और बच्चे दोनों ही बच्चों के घर की भाषा के साथ स्कूल की भाषा का उपयोग कर रहे हैं। ▪ एकल भाषी कक्षा में बच्चे चुपचाप शिक्षक की बातें सुन रहे हैं, जबकि बहुभाषी कक्षा में बच्चे और शिक्षक मिलकर चर्चा कर रहे हैं। ▪ एकल भाषी कक्षा में बच्चे शिक्षक की बातों को दोहरा रहे हैं, बहुभाषी कक्षा में बच्चे अपनी मौलिक अभिव्यक्ति भी दे रहे हैं। • प्रतिभागियों को दो-दो के जोड़ों में **'हैंडआउट 1-बच्चों के घर की भाषा के उपयोग का महत्व'** पढ़ने के लिए कहा जाएगा। दो या तीन प्रतिभागियों से इस विषय पर अपनी बात रखने के लिए कहा जाएगा। • सहजकर्ता निम्न बिन्दुओं पर सत्र का समेकन करेंगे।

	▪ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाषा की केंद्रीय भूमिका होती है। ▪ सभी विषयों की समझ के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। ▪ परिचित भाषा की मदद से सोचना, समझना, और सभी विषय सीखना आसान होता है। ▪ बच्चों की भाषा के उपयोग से बच्चे कक्षा की गतिविधियों में अपनी सक्रिय भागीदारी देते हैं। ▪ बच्चों की भाषा में शिक्षण ज्ञात से अज्ञात और परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ने में मदद करता है। ▪ परिचित भाषा में शिक्षण से बच्चे उच्च-स्तरीय सोच के काम कर पाते हैं। ▪ परिचित भाषा का कक्षा में उपयोग बच्चों में अभिव्यक्ति के कौशल के विकास में मददगार होती है। ▪ बच्चों की भाषा में शिक्षण उनमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का भाव बढ़ाता है। ▪ बच्चों की भाषा में शिक्षण उन्हें दूसरी भाषा सीखने में मदद करता है। ऑडियो सुनने के लिए QR Code का उपयोग करें: ● प्रतिभागी एक चिट पर बच्चों की भाषा को शिक्षा में शामिल करने का कोई एक कारण लिखकर एक बड़ी ड्राइंग शीट पर चिपकाएँगे। सत्र के अंत में प्रतिभागी उन कारणों को पढ़ सकते हैं।

सत्र	**बहुभाषी शिक्षा और कानूनी प्रावधान**
समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**बहुभाषी शिक्षा संबंधी संविधान और राष्ट्रीय दस्तावेजों के प्रावधानों को समझने का प्रयास करना।**
सामग्री	**हैंडआउट 2-मातृभाषा में शिक्षण और कानूनी प्रावधान, हैंडआउट 3 - निपुण भारत-कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग।**
प्रक्रिया का विवरण	● प्रतिभागियों से गूगल फार्म की मदद से तीन / चार जानकारी आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। जिनके जवाब उन्हें तुरंत ही मिलेंगे और एक समूह के रूप में उनके प्रदर्शन की जानकारी भी ग्राफ के माध्यम से दी जाएगी। **गूगल फार्म QR Code** ● बहुभाषी शिक्षण की मार्गदर्शिका के माध्यम से प्रतिभागियों को भारत के संविधान, NCF-2005, RtE-2009, NEP-2020 और निपुण भारत दस्तावेज में दिए बहुभाषी शिक्षा से संबंधित प्रावधानों से परिचित कराया जाएगा। सहजकर्ता प्रतिभागियों से **'हैंडआउट 2-मातृभाषा में शिक्षण और कानूनी प्रावधान'** पढ़ने को कहेंगे और दो तीन प्रतिभागी विभिन्न दस्तावेजों के प्रावधानों का बड़े समूह के सामने प्रदर्शन करेंगे।

	• सभी प्रतिभागी **'हैंडआउट 3-निपुण भारत-कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग'** पढ़ेंगे और सहजकर्ता मुख्य बिन्दुओं का समेकन करेंगे।

सत्र	**बहुभाषी शिक्षा क्या है ?**
समय	**60 मिनट**
उद्देश्य	**बहुभाषी शिक्षा क्या है, इसके प्रमुख गुण और लाभ समझना।**
सामग्री	**बहुभाषी कक्षा का विडियो, QR Code, हैंडआउट 4 – बहुभाषी शिक्षण-क्या और क्यों**
प्रक्रिया का विवरण	• प्रतिभागियों के सामने **'बहुभाषी शिक्षा क्या है ?'** प्रश्न रखा जाएगा और समूह से आठ-दस लोगों की प्रतिक्रिया लेकर उसे बोर्ड पर लिखा जाएगा। • इसके पश्चात प्रतिभागियों को बहुभाषी कक्षा का एक विडियो दिखाया जाएगा। • विडियो देखने के बाद प्रतिभागियों से इस कक्षा के बारे में तीन प्रमुख बातें लिखने को कहा जाएगा, (सहजकर्ता इन बिन्दुओं को बोर्ड पर भी लिख सकते हैं।) कुछ बिन्दु इस प्रकार हो सकते हैं। ▪ बच्चों से जुड़े संदर्भों का कक्षा में उपयोग कर अपनी भाषा में बच्चों को बातचीत करने के मौके देना। ▪ बच्चों से निम्न व उच्च स्तरीय प्रश्न पूछते हुए बातचीत को आगे बढ़ाना। ▪ बातचीत के दौरान बच्चों की भाषा और स्कूल की भाषा का मिला-जुला प्रयोग करना। ▪ स्कूल की भाषा के उपयोग करने के लिए बच्चों पर दबाव नहीं डालना। ▪ तनाव रहित व सहज वातावरण में शिक्षण कार्य करना। • इन बिन्दुओं को सत्र के प्रारंभ में लिखे बिन्दुओं से जोड़कर प्रतिभागियों के बड़े समूह के साथ चर्चा की जाएगी। • इसके पश्चात प्रतिभागियों को तीन समूहों में बाँट कर एक- एक समूह को 'हैंडआउट 4 – बहुभाषी शिक्षण-क्या और क्यों' से निम्न विषयों को पढ़ने के लिए कहा जाएगा: ▪ **समूह 1 – हमें एक से अधिक भाषाएँ सीखनी क्यों जरूरी हैं?** ▪ **समूह 2 – प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषाएँ सिखाने का उचित क्रम क्या है?** ▪ **समूह 3 – बहुभाषी शिक्षण क्या है और क्यों जरूरी है?** • प्रत्येक समूह अपने-अपने विषय की बड़े समूह के सम्मुख प्रस्तुति देंगे। • सहजकर्ता निम्न बिन्दुओं पर सत्र का समेकन करेंगे: ▪ **बहुभाषी समाज में तालमेल बनाने के लिए एक से अधिक भाषाएँ सीखने की आवश्यकता है।** ▪ **सामाजिक और आर्थिक रूप से मजबूत होने के लिए एक से अधिक भाषाएँ सीखने की आवश्यकता है।**

	▪ **परिचित भाषा से अपरिचित भाषा की ओर बढ़ने का उचित क्रम क्या होता है?** ▪ **बहुभाषी शिक्षण के लिए बच्चों के अनुभवों, परिवेश और संस्कृति को कक्षा में स्थान दिया जाना चाहिए।** ▪ **कक्षा में भाषाओं का मिला-जुला प्रयोग किया जाना चाहिए।** ▪ **बहुभाषी शिक्षण बच्चों में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना पैदा करता है।** **बहुभाषी शिक्षण स्कूल और समुदाय के आपसी संबंध मजबूत करता है।**

सत्र	**बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ**
समय	**60 मिनट**
उद्देश्य	**बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के विभिन्न पहलुओं के आधार पर बच्चों की घर की भाषा को शामिल करने के तरीके**
सामग्री	**चार्ट पेपर, स्केच पेन, हैंडआउट 5 – बहुभाषी शिक्षण का मॉडल 2**
प्रक्रिया का विवरण	● सहजकर्ता प्रतिभागियों से उनके जिले की भाषाई परिस्थिति समझने का प्रयास करेंगे। ▪ क्या उनके जिलों में बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा में अंतर है? ▪ यदि है, तो वे इन परिस्थितियों में किस प्रकार शिक्षण कार्य कर रहे हैं। ▪ क्या वे कक्षा में राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों का उपयोग कर रहे हैं? इन पुस्तकों के उपयोग से शिक्षकों और बच्चों को किस प्रकार के लाभ मिल रहे हैं? ● सहजकर्ता प्रतिभागियों से बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियों पर बातचीत करेंगे। वे उनसे बहुभाषी शिक्षण की कुछ रणनीतियाँ बताने को कहेंगे और प्रतिभागियों द्वारा सुझाई गई रणनीतियों को बोर्ड पर लिखेंगे। ● इसके पश्चात सहजकर्ता प्रतिभागियों के चार समूह बनाएंगे और प्रत्येक समूह को 'हैंडआउट 5 – बहुभाषी शिक्षण का मॉडल 2' की एक-एक रणनीति पढ़ने को कहेंगे। ● प्रत्येक समूह बड़े समूह के सम्मुख अपने द्वारा पढ़ी गई रणनीति का प्रस्तुतिकरण एक उदाहरण के साथ देंगे। प्रस्तुतिकरण के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हो सकते हैं: ▪ **सत्र के प्रारंभ में कुछ सप्ताह या महीने बच्चों की घर की भाषा में काम करें।** ▪ **कुछ समय बाद पाठ्यपुस्तक पर काम करने के लिए हिन्दी का उपयोग करना प्रारंभ करें।** ▪ **शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा में मिली-जुली भाषा का प्रयोग करें।** ▪ **बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित उपयोग करना।** ● इस सत्र का समेकन सहजकर्ता निम्न बिन्दुओं के आधार पर करेंगे: ▪ **बच्चों के परिवेश, अनुभवों, पूर्वज्ञान और संस्कृति को कक्षा में स्थान देना।** ▪ **कक्षा में बच्चों की भाषा का मौखिक रूप से प्रयोग करना।** ▪ **बच्चों की भाषा और स्कूल की भाषा का मिला-जुला प्रयोग करना।** ▪ **स्कूल की भाषा सीखने के लिए रोचक, सार्थक और स्तर-अनुरूप अवसर प्रदान करना।** ▪ **किसी विषय में नई या कठिन अवधारणा सीखने-सिखाने के लिए बच्चों की भाषा का प्रयोग करना।**

3. संतुलित भाषा शिक्षण पद्धति

कुल समय – 1:30 घंटे

उद्देश्य :

- **भाषा शिक्षण की संतुलित पद्धति को समझना**
- **भाषा के कौशलों को अर्थ-केन्द्रित और शब्द पहचान केन्द्रित कार्यों में विभाजित करना**
- **कक्षा में संतुलन के तरीके की समझ**
- **भाषा शिक्षण की चार-खंडीय रूपरेखा से परिचय**

विषय	**संतुलित पद्धति**
उद्देश्य	**पढ़ने के कौशलों के उदाहरण से भाषा कक्षा के कार्यों में संतुलन देखना**
सामग्री	**व्हाइट बोर्ड, मार्कर, पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता बोर्ड / पीपीटी के माध्यम से प्रतिभागियों को कुछ वाक्य पढ़ने के लिए दिखाएँ। हर वाक्य के पढ़ने के प्रयास के बाद ना पढ़ पाने की चुनौतियों पर चर्चा करें। ***उसकी सूचि भी साथ में बोर्ड पर लिखते जाएँ।*** **पहला वाक्य** – (Refer to slide 4) এটাআজএকটিঠান্ডাদিন • ***पूछें*** – क्या आप यह वाक्य पढ़ पाए? नहीं, तो क्या चुनौती आई? ***अपेक्षित उत्तर***:भाषा नहीं आती, लिपि नहीं आती । **वे वर्ण या लिखी हुई लिपि नहीं पहचान पाए क्योंकि भाषा नहीं आती ।** • सहजकर्ता चर्चा के बाद भाषा का नाम और वाक्य पढ़कर मतलब के साथ बताएँ। (बांगला – आज एक ठंडा दिन है ।) **दूसरा वाक्य –** **काईला सिले सद्दल पूरी कोरची तै, से बालू दारी** (refer to slide 5) • ***पूछें*** – क्या इसको पढ़ पाए? *पूछें* – क्या चुनौती आई? ***अपेक्षित उत्तर*** – पढ़ तो पाए पर समझ नहीं पाए । या तो **इन शब्दों के कोई अर्थ नहीं हैं या ये किसी अपरिचित भाषा में लिखा** है । क्योंकि ये देवनागरी में लिखा है तो इसको पहचान पाए पर समझ नहीं आया । **तीसरा अनुच्छेद** – (Refer to slide 6) नाहस सहसा कम चारण रहे हैं। सहसा से हमें हर तरह के ककत मिलते हैं। नाहस तमाया आ गया है। लोग तमाया से ऐसे ककत लेने लगे हैं। तमाया आया, और फिर ककोलत आया। अब चारो ओर ककोलत चारण रहे हैं।

चर्चा:

क्या आप इसको पढ़ पाए?

क्या आप इसको समझ पाए ?

क्यों नहीं समझ पाए?

***अपेक्षित जवाब*– शब्दावली** नहीं आती। भले ही प्रवाह के साथ पढ़ लिया पर कुछ शब्दों के अर्थ समझ नहीं आए। वाक्य संरचना, शब्द विन्यास परिचित भाषा से लिया गया है इसलिए प्रवाह के साथ पढ़ पाए। लेकिन समझ नहीं आया। आमतौर पर बच्चे पाठ को समझे या नहीं, पर प्रवाह के साथ शब्द पहचान कर लेते हैं। लिपि पहचान की वजह से ज़्यादातर बच्चे सिर्फ उच्चारित तो करते हैं पर समझ नहीं पाते। तो वो पढ़ना निरर्थक हो जाता है।

चौथा वाक्य – (Refer to slide 7)

तनु बाहर खड़ी हैऔर उसकी आँखों में अजीब सी उत्सुकता है।

चर्चा:

क्या आप इसको पढ़ पाए?

क्या यह आपको समझ आया?

बताइए – तनु बाहर क्यों खड़ी होगी?

उसकी आँखों में उत्सुकता क्यों हो सकती है?

जब हमें भाषा आती है, और हम प्रवाह से पढ़ पाते हैं तो वह समझना हमारे लिए आसान हो जाता है और हम अपने अनुभवों, समझ, सन्दर्भ या पूर्वज्ञान से उसका अर्थ भी निर्माण कर सकते हैं।

सहजकर्ता के लिए नोट:

*ऊपर की गयी चर्चा में **सिर्फ वाक्य दिखाकर प्रश्न उत्तर जैसी चर्चा ना करें। अपेक्षित उत्तर को थोडा समझाएँ, साथ में बोर्ड पर "पढ़ ना पाने की चुनौतियों" की सूचि बनाते जाएँ। पिछले वाले बिन्दुओं से जोड़ें और बिंदु बढ़ाते जाएँ।** हर बिंदु में **समझ की कमी** वाली बात पर ज़रूर ध्यान दिलवाएँ। कि इस चुनौअती से भी समझ रूकती है या अटकती है।*

चर्चा:

पिछले FLN और MLE सत्र से जोड़ें – कि हमने देखा है कि अधिगम लक्ष्य या प्रतिफल किस प्रकार पढ़ने के व्यापक अर्थ को साथ लिए चल रहे हैं। जिस प्रकार अर्थ निर्माण या समझ पर ज़ोर दिया गया है हर गतिविधि में क्या आपको लगता है कि हम वर्तमान कक्षाओं के कार्यों द्वारा उन प्रतिफलों को प्राप्त कर सकेंगे?

चलिए, अभी की कक्षाओं को याद करते हैं। दो तरह की कक्षाओं को ध्यान दिलवाना चाहती हूँ। भाषा कालांश के दौरान आप आमतौर पर कक्षाओं में क्या-क्या काम होता देखते हैं?

अपेक्षित जवाब – वर्ण माला सिखाई जाती है। ककहरा लगाया जाता है, पाठ्यपुस्तक से पढाया जाता है, बोर्ड पर आकर बच्चों से दोहराया जाता है, बच्चे कॉपी, बोर्ड पर वर्ण माला लिखते हैं।

पूछें – वर्ण माला किस क्रम में सिखाई जाती है ?

अपेक्षित जवाब – अ, आ....क, ख, ...

पूछें – अब एक और प्रकार की कक्षा याद दिलाती हूँ, एक और होती है जिसमे कुछ शिक्षक नवाचार से पढ़ा रहे होते हैं। वहाँ क्या-क्या अंतर होता है ?

अपेक्षित जवाब – कुछ कक्षाओं में कविता गाना, कहानी सुनाना, खेल / गतिविधि के माध्यम से ज़्यादा पढ़ाते हैं। वर्ण माला भी सिखाते हैं।

चर्चा:

ठीक। तो अगर मैं पूछूँ कि दोनों कक्षाओं की अच्छी बातें एक तरफ लिख लेते हैं और दोनों की बुरी बातें दूसरी तरफ तो वो कौन-कौन सी होंगी?

अपेक्षित जवाब:

सहजकर्ता बोर्ड पर दो कॉलम बनाएँ और दोनों प्रकार के शिक्षण पद्धति की अच्छी और चुनौतीपूर्ण बिंदु लिखें अच्छी – कक्षा में अपनापन, बच्चे सहज, बोर नहीं, खेल के माध्यम से सीखना
चुनौती – अनुशासन, सीखने में समय, आदि।

चर्चा:

पहला सत्र याद करते हैं जहाँ FLN मिशन के डॉक्यूमेंट में भी **"संतुलन"** शब्द का इस्तेमाल हुआ है। तो अगर हम निष्कर्ष निकालें तो दोनों प्रकार की कक्षाओं की अच्छाइयाँ अगर शामिल करें तो संतुलन की तरफ आगे बढ़ जायेंगे। अब थोडा संतुलन को समझते हैं।

- सबसे पहले आप बताएँ पढ़ने के लिए हमें पढ़ने के लिए कौन-कौन से कौशल आने चाहिए?

  अपेक्षित जवाब – वर्ण माला, वर्तनी, दो अक्षर को जोड़कर पढ़ना, बनावट।

- सहजकर्ता बताए कि हमने ऊपर भी कुछ कौशल देखे – अनुभव, सन्दर्भ या पूर्वज्ञान, भाषा, प्रवाह, शब्दावली, अनुभव जोड़ने के मौके, आदि।

- अब दो आयाम के आधार पर ऊपर की गई गतिविधियों की समीक्षा करते हैं: **शब्द पहचान और भाषाई समझ**।

- ऊपर बनाई गयी चुनौतियों की सूची में सहजकर्ता चर्चा करते हुए **हर गतिविधि के सामने प्रतिशत लिखें। पूछते चलें** – पहली गतिविधि में किस आयाम पर काम हुआ - शब्द पहचान का कितना काम था और भाषाई समझ का कितना ?

  इससे हम यह समेकित कर सकते हैं कि पढ़ने में संतुलन ही काम आता है। दोनों मुख्य कौशलों की ज़रूरत पड़ती है।

- सहजकर्ता दोनों कौशलों के सम्बन्ध को समीकरण के माध्यम सेबताएँगे। (Refer to slide 8)

  समझके साथ पढ़ना = प्रवाहपूर्ण शब्द पहचान X अर्थ निर्माण या भाषाई समझ

- ***पूछें***– कौन-कौन से छोटे कौशल होंगे शब्द पहचान के?

  अपेक्षित उत्तर – वर्णमाला पहचान, वर्तनी, बनावट, जोड़कर पढ़ना, गति से शब्द पढ़ना

- भाषाई समझ किन छोटे कौशलों से बना है?

  अपेक्षित उत्तर – शब्दावली, व्याकरण, संरचना, पूर्वज्ञान, अनुमान लगाना (सोचना / तर्क करना, विश्लेषण करना आदि।)

इन्ही के संतुलन की ज़रूरत भाषा कक्षा के हर काम में होती है। पढ़ने के अलावा लेखन आदि में भी इन्ही सब कौशलों के संतुलन काम आते हैं। भाषा सीखने में सभी कौशल साथ-साथ चलते हैं।

जैसे – संगीत / ऑर्केस्ट्रा

एक ऑर्केस्ट्रा में कई वाद्ययंत्र साथ में बजते हैं और वो आवाज़ कानों को मधुर लगती है। लेकिन मान लीजिए कोई एक वाद्ययंत्र सुर से अलग हो जाए या तार टूट जाए या सबके साथ तालमेल मिलाकर ना चले तो पूरा संगीत बिगड़ जायेगा और मधुर नहीं लगेगा। वैसे ही इन सभी कौशलों के

साथ है। यदि यह साथ में ठीक से तालमेल मिलाकर नहीं उपयोग किये जायेंगे तो पढ़ना नहीं हो पायेगा।(Refer to slide 9)

समेकन:

अब जब यह स्थापित हो गया है कि संतुलन होना ज़रूरी है तो इस पर आते हैं कि कक्षा के कार्यों में यह संतुलन कैसे दिखेगा। यह संतुलन को बनाए रखने के लिए हम भाषा शिक्षण में चार-खंडीय रूपरेखा को शामिल करते हैं। यह बहुत अलग या नया नहीं है। सिर्फ भाषा शिक्षण के काम जो आप करते आए हैं – उन्हें व्यवस्थित कर दिया है। समय / अवधि के साथ एक योजनाबद्ध तरीके से बिना सभी बच्चों को सक्रीय रूप से शामिल करके सतत आकलन के साथ करते हैं।

चार खंडीय रूपरेखा (Refer to slide 10)

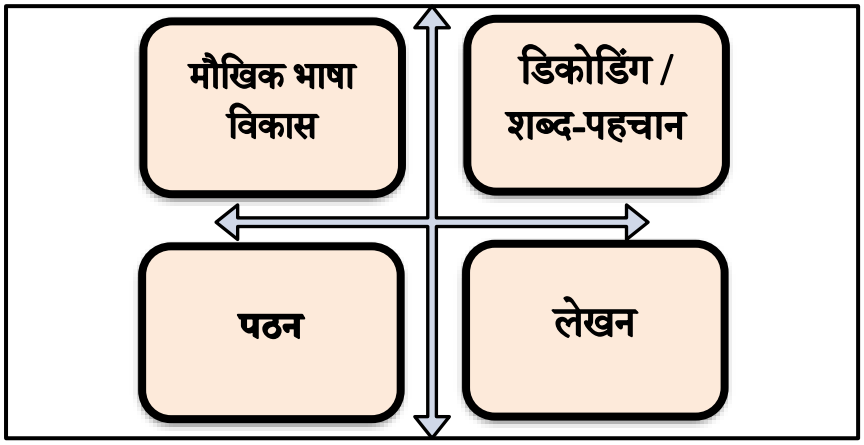

4. मौखिक भाषा विकास

कुल समय – 2:00 घंटे

उद्देश्य :

- **मौखिक भाषा विकास क्या है ? क्यों आवश्यक हैं ?**
- **मौखिक भाषा विकास के कौशल,रणनीतियों और गतिविधियों पर प्रतिभागियों की समझ बना पाना।**

विषय	**मौखिक भाषा क्या है और इसमे क्या-क्या शामिल हैं।**
समय	**1 घंटा**
सामग्री	**चार्ट पेपर, स्केच पेन, चित्र कार्ड, पीपीटी, रिम पेपर, बोर्ड मार्कर**
उद्देश्य	● **प्रतिभागी समझ पाएँगे कि मौखिक भाषा क्या है ?** ● **वर्तमान में हमारी कक्षाओं में मौखिक भाषा की स्तिथि क्या है ?** ● **मौखिक भाषा विकास से अर्जित होने वाली क्षमताओं के बारे में समझ पाएँगे।**
पूर्व-तैयारी	**सहजकर्ता शब्दों की पर्चियाँ पूर्व में ही तैयार कर लें।**
प्रक्रिया का विवरण	■ सहजकर्ता सत्र का आरंभ सभी प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए करें कि अभी तक हम सभी ने **संतुलित भाषा शिक्षण पद्धति** के बारे में समझा। जिसमें मुख्य रूप से दो तरह के कौशलों के बीच संतुलन पर बात की गई है- **पहला- कौशल केंद्रित कार्य** **दूसरा- अर्थ केंद्रित कार्य।** कौशल केंद्रित कार्य में पठन एवं लेखन क्षमता विकास शामिल है। जबकि अर्थ केंद्रित कार्य जो मुख्य रूप से अर्थ पर कार्य करता है, जिसमें मुख्य रूप से सुनना और बोलना शामिल है। इसके साथ ही हमने भाषा शिक्षण के चार खंडों **(मौखिक भाषा विकास, डिकोंडिंग, पठन व लेखन)** के बारे में भी जाना था। **(यहाँ सहजकर्ता मौखिक भाषा पीपीटी की स्लाइड 1 दिखाकर चर्चा करें।)** ● आइए, अब इसके पहले खंड "**मौखिक भाषा विकास** "को समझते हैं। लेकिन उससे पहले हम कुछ वीडियो देखेंगे। **वीडियो - मौखिक भाषा विकास -** ● वीडियो दिखाने के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें- इन वीडियो में क्या हो रहा था ?

- प्रतिभागियों द्वारा कुछ इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ आ सकती हैं -
  - **सभी बच्चे चुप थे, शिक्षक बोल रहे थे, कक्षा में सिर्फ दोहरोने का काम हो था, आदि।**
- अब सहजकर्ता फिर सभी प्रतिभागियों से पूछें – कि आपके अनुसार क्या इस कक्षा में कोई भी गतिविधि मौखिक भाषा से संबन्धित थी ?
- अधिकतर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया **ना** मे होगी।

- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अब हम सब एक गतिविधि करेंगे।
  गतिविधि के लिए सहजकर्ता 4-6 प्रतिभागियो को एक एक पर्ची देंगे, जिस पर कुछ शब्द लिखे होंगे- **जैसे- प्रशिक्षण, चुनाव, मेला, सपना , बाज़ार, कक्षा इत्यादि।**
  (इन पर्चियों पर वो शब्द लिखें होंगे जिस पर प्रतिभागी बात कर सकते है, जिन पर प्रतिभागी अपने मन से कहानी बना सकते हैं।)
- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को निर्देश दें- कि आपके पास जो पर्ची है, उसमें जो लिखा है आपको उसके बारे में दो-तीन वाक्यों में बताना है।
- सहजकर्ता चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए चाहे तो बीच-बीच में प्रतिभागियों से प्रश्न भी कर सकते हैं।
- जब सभी प्रतिभागी अपनी-अपनी पर्ची के बारे मे बता चुकें तो सहजकर्ता उनसे पूछें कि आपने दिए गए शब्द का वर्णन किस आधार पर किया है। जैसे- आपने उसके बारे में सोचा होगा या कल्पना की होगी आदि। इसी तरह इन शब्दों के लिए आपने किस आधार पर अपनी बात यहाँ रखी।
- सहजकर्ता / सह-सहजकर्ता उनके द्वारा कही गई बातों में से मुख्य बातों को व्हाइट बोर्ड या चार्ट पेपर में बिंदुवार लिखेंगें।
- संभवतः प्रतिभागियों द्वारा ये बिन्दु इस प्रकार से आ सकते हैं - **अनुभव द्वारा, अनुमान लगाना, सोचना, तर्क करना, निष्कर्ष बताना, प्रतिक्रिया देने, आदि।**
- अब सहजकर्ता कहें कि क्या इनके अलावा और भी कुछ बिन्दु हो सकते हैं, जिनसे हम ये कह सकें कि मौखिक भाषा में ये सभी शामिल हैं।
- सहजकर्ता उनके द्वारा बताए अन्य बिन्दुओं को भी पहली वाली सूची मे जोड़ते रहें।
- अब सहजकर्ता चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहे कि **"मौखिक भाषा" विकास केवल अपनी बात को स्पष्टता से सामने वाले को कह पाना ही नहीं है, बल्कि इसमें कई छोटे-बड़े कौशल/ क्षमताएँ शामिल होती हैं, जिनमें से कुछ अभी अपने बताए भी हैं, जैसे: अनुमान लगाना, सोचना, तर्क करना आदि।**
- आइए, अब देखें कि मौखिक भाषा-विकास में कौन कौन-सी क्षमताएँ शामिल हैं:

	• आइए अब हम देखते हैं कि **मौखिक भाषा-विकास में कौन कौन-सी क्षमताएँ शामिल हैं: स्लाइड 3 / चार्ट** के माध्यम से सहजकर्ता सभी को समझाएँ कि मौखिक भाषा में निम्न **क्षमताएँ** शामिल होती हैं। **1-सुनी हुई बात /पाठ को दुबारा सुनाना/बताना 2-प्रतिक्रिया देना 3- सोचने के लिए बातचीत का प्रयोग 4-प्रश्न पूछना 5- अनुमान लगाना व निष्कर्ष निकालना 6-नए शब्दों का प्रयोग करना 7-अनुभव साझा करना 8-सहमति/असहमति जताना 9-मुख्य विचार पकड़ना** ***नोट- (प्रशिक्षक /शिक्षक किसी भी गतिविधि को करवाते समय शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान दें कि गतिविधि में प्रयोग किए जाने वाले शब्द प्रतिभागी/बच्चों के स्तर के हों।)***

विषय	**मौखिक भाषा विकास क्यों आवश्यक है ?**
समय	**30 मिनट**
सामग्री	**चार्ट पेपर, स्केच पेन, चित्र कार्ड, रिम पेपर, वीडियो**
उद्देश्य	**प्रतिभागी मौखिक भाषा की आवश्यकता / जरूरत को समझ पाएँगे।**
प्रक्रिया का विवरण	• अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अभी तक हमनें **मौखिक भाषा विकास क्या है और इसमें क्या-क्या क्षमताएँ शामिल है** को समझा। • अब सहजकर्ता सभी के पूछें कि जब हम इन क्षमताओं की बात करते हैं तो **'क्या ये क्षमताएँ बच्चों में भी विकसित होना आवश्यक है ?** • सहजकर्ता इसका उत्तर **हाँ** में अपेक्षित करें। • इसके बाद सहजकर्ता अगला सवाल पूछें यदि **हाँ** तो क्यों विकसित करना आवश्यक हैं ? • प्रतिभागियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं के मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखें। • अब सहजकर्ता मौखिक भाषा की आवश्यकता को समझाने के लिए **स्लाइड 4-5 / चार्ट** दिखाकर चर्चा करें। • इसके बाद सहजकर्ता अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहें कि **यह स्पष्ट है कि मौखिक भाषा के विकास का अर्थ केवल बोलने और सुनने की क्षमता से कहीं ज़्यादा है। पढ़ना और लिखना, एक तरह से मौखिक भाषा की क्षमताओं तथा सुनकर समझने और बोलकर अपनी बात कह पाने का ही विस्तार है।** तो इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, **मौखिक भाषा का विकास ही पठन और लेखन का आधार बनता है।** • इसके बाद सहजकर्ता कहें कि अगर बच्चों के साथ मौखिक भाषा पर सुचारु रूप से काम करवाया जाए तो बच्चों में निम्न कौशलों का विकास होगा। **(सोचना,तर्क करना,दूसरों के साथ बेहतर संवाद करना,स्कूल की मानक भाषा पर बेहतर पकड़,पठन और लेखन क्षमता का आधार,कक्षा की अकादमिक भाषा ग्रहण करना,औपचारिक शब्दावली ग्रहण करना,निष्कर्ष निकालना, राय व्यक्त करना)** जिनकी बात हम ऊपर एक गतिविधि के माध्यम से भी कर चुके हैं।

	• क्योंकि हम चाहते हैं कि बच्चे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में बेहतर रूप से जुडने के साथ-साथ भविष्य में भी बेहतर प्रदर्शन कर पाएँ तो आवश्यक है कि बच्चों में इन कौशलों का विकास हो। • इसके बाद सहजकर्ता **स्लाइड 6/ चार्ट** के द्वारा मौखिक भाषा के कौशलों को समझाएँ। • अब सहजकर्ता अपनी चर्चा को समेकित करते हुए कहें कि इसलिए प्रारंभिक कक्षाओं में **बच्चों को सुनकर समझने और बोलने के पर्याप्त अवसर** मिलने चाहिए। शुरुआत से ही **मौखिक रूप में चर्चा, उच्चस्तरीय प्रश्न पूछना, बच्चों को सोचने** और **तर्क करने** के लिए प्रोत्साहित करना और **अच्छी शब्दावली** का विकास करने से **संज्ञानात्मक अकादमिक भाषायी कौशल** के विकास में मदद मिलती है। यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों को शुरुआत में उसी भाषा में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, जिसे वे स्कूल में आने से पहले से जानते हैं। इसलिए **उनकी घर की भाषा, सांस्कृतिक संदर्भ और अनुभवों का उपयोग करना** अति-महत्वपूर्ण है। अंत में सहजकर्ता सभी को **"मौखिक भाषा क्यों आवश्यक है"** से संबन्धित एक हैंडआउट दें, जिसे प्रतिभागी बाद में पढ़कर मौखिक भाषा की आवश्यकता पर अपनी समझ को बढ़ा पाएँ।

विषय	**मौखिक भाषा की रणनीतियाँ व गतिविधियाँ**
समय	1 **घंटा**
सामग्री	**चार्ट पेपर, स्केच पेन,**
उद्देश्य	• **प्रतिभागी मौखिक भाषा की रणनीतियाँ और गतिविधियों को समझ पाएँगे।** **प्रतिभागी मौखिक भाषा विकास के लिए गतिविधियाँ कैसे की जाएँ इसके बारे में समझ पाएँगे।**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को कहें कि अभी तक हमने बात की कि - **मौखिक भाषा क्या है ? उसमें कौन-कौन से कौशल शामिल है? और यह क्यों आवश्यक है ?** • अब सहजकर्ता प्रतिभागियों के बीच में एक सवाल रखें- **जब हम सबका मानना है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों के साथ मौखिक भाषा पर काम किया जाना आवश्यक है, तो हमें इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कक्षाओं में क्या करना चाहिए ?** • प्रतिभागियों की ओर से संभावित रूप से प्रतिक्रिया आएगी कि बच्चों के साथ मौखिक भाषा पर काम किया जाना चाहिए। • सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछें कि- ठीक है तो **आप अभी अपनी कक्षाओं में मौखिक भाषा पर क्या और कैसे काम करते हैं ?** • सहजकर्ता प्रतिभागियों द्वारा बताई जाने वाली गतिविधियों/ कामों को बोर्ड पर लिखें। कुछ संभावित काम इस प्रकार से आ सकते हैं - कविता सुनाना, कहानी सुनाना, चित्र पर चर्चा, आदि। ***(अगर कोई प्रतिभागी प्रतिभाग नहीं कर रहा है तो उसे नाम लेकर अपनी राय बताने के लिए प्रेरित करें)*** • इसके बाद सहजकर्ता किसी एक प्रतिभागी से **"चित्र पर चर्चा"** करके दिखाने के लिए कहें। • प्रतिभागी द्वारा प्रस्तुति के बाद सहजकर्ता सभी से कहें कि ठीक है, अब हम एक वीडियो में भी देखते हैं कि चित्र पर चर्चा कैसे-कैसे की जा सकती है। • इसके बाद सहजकर्ता '**स्लाइड 7** पर दिए गए वीडियो लिंक के द्वारा के द्वारा चित्र पर चर्चा का वीडियो प्रतिभागियों को दिखाएँ।

	वीडियो - चित्र पर चर्चा – ● **वीडियो दिखाने के बाद सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछें कि वीडियो में शिक्षिका किस प्रकार के प्रश्न बच्चों के साथ कर रही थीं?** ● इसमे ज़्यादातर प्रतिभागियों की प्रतिकृया होगी कि **क्या, क्यों, कैसे,** इत्यादि वाले। ● प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। ● इसके बाद सहजकर्ता बताएँ कि हमें बच्चों के साथ इस प्रकार के प्रश्न करने चाहिए, जिसमें बच्चों को **कौन, क्या, कैसे, कहाँ, कल्पना करने, तर्क करने, अनुमान लगाने, राय देने,** आदि के अवसर मिलें जैसे वीडियो में शिक्षिका कर रही थीं। ● सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें कि **चित्र-चार्ट पर इस गतिविधि के अतिरिक्त और क्या काम करवाया** जा सकता है ? ● प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। ● इसके बाद सहजकर्ता प्रतिभागियों को कहें की अब हम **स्लाइड -8-11 / चार्ट** के माध्यम से देखते हैं कि चित्र चार्ट पर और क्या-क्या काम करवाए जा सकते हैं। ● और साथ ही यह भी देखेंगे कि मौखिक भाषा के लिए क्या-क्या काम किए जाने चाहिए। ● स्लाइड पर चर्चा करने के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि क्या आपके राज्य की पाठय-पुस्तक मे भी कुछ चित्र चार्ट दिये गए हैं क्या ? ● प्रतिभागियों के द्वारा इसकी प्रतिक्रिया अधिकतर **हाँ** में ही होगी। ● अब सहजकर्ता प्रतिभागियों को कहें कि हमारी **पाठ्य-पुस्तक** मे भी जो चित्र चर्चा के लिए दिए गए हैं, वो भी इसलिए हैं कि बच्चों के साथ इन पर विभिन्न तरीको से काम करके बच्चों मे मौखिक भाषा का विकास किया जा सके। ● हमें मौखिक भाषा के लिए करवाई जाने वाली किसी भी गतिविधि को केवल एक दिन कि गतिविधि मानकर खत्म नही कर देना चाहिए। ये **गतिविधियाँ इस प्रकार की हैं कि इन पर एक से अधिक दिन और एक से अधिक बार काम करवाया जाना चाहिए।** इसके बाद सहजकर्ता प्रतिभागियों को **'मौखिक भाषा की गतिविधियाँ'** लेख दें और कहें कि आप इस लेख मे से मौखिक भाषा विकास की अन्य गतिविधियों को पढ़कर समझें।

विषय	**समेकन**
समय	**30 मिनिट**
उद्देश्य	**प्रतिभागी मौखिक भाषा के सत्र को कितना समझ पाए, इसका आकलन करना**
सामग्री	**बॉल, प्रश्नों की पर्चियाँ, बाउल, म्यूजिक (मोबाइल या घंटी द्वारा)**

प्रक्रिया का विवरण	• इस गतिविधि के लिए सहजकर्ता पहले से ही निम्न प्रश्नों की पर्चियाँ तैयार करके रख लें। ***(सहजकर्ता समयानुसार प्रश्नों की संख्या को घटा बढ़ा सकते हैं।)*** **1. मौखिक भाषा विकास से आप क्या समझते हैं और इसमें क्या-क्या शामिल हैं ?** **2. क्या वर्तमान में हमारी कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास पर संतोषजनक कार्य हो रहा है? यदि हाँ तो कैसे यदि नहीं तो क्यों ?** **3. मौखिक भाषा विकास के विकसित होने पर विद्यार्थियों में कौन-कौन से क्षमताओं का विकास होता है ?** **4. मौखिक भाषा विकास की रणनीतियों/गतिविधियों के बारे में बताते हुए किसी एक गतिविधि पर चर्चा कीजिए।** **5. मौखिक भाषा विकास के लिए कक्षा में किस तरह का वातावरण होना चाहिए ?** **6. मौखिक भाषा विकास का आकलन कैसे कर सकते हैं ?** **7. मौखिक भाषा विकास बेहतर पठन कौशल की आधारशिला है, कैसे ?** **8. स्कूल में तो बच्चे पढ़ना-लिखना सीखने और अन्य पढ़ने आते हैं, ऐसे में मौखिक भाषा की क्या जरूरत है? अपने विचार अभिव्यक्त करें।** • अब सहजकर्ता सभी पर्चियों को एक बाउल में डाल दें और सभी को ये निर्देश दें कि अब हम एक खेल खेलेंगे। • उन्हें बाउल दिखाते हुए बताएँ कि इस बाउल मे कुछ प्रश्नों की पर्चियाँ हैं, अब मैं म्यूजिक बजाऊँगा और सभी बारी-बारी से इस बाउल को आगे बढ़ाते रहेंगे। म्यूजिक के रुकने पर ये बाउल जिसके भी पास रुकेगा, उसे इसमें से एक पर्ची उठानी हैं और उसमे लिखे प्रश्न का जवाब देना है। निर्देश देने के बाद सहजकर्ता ये गतिविधि सभी प्रतिभागियों के साथ करें।
सत्र समेकन	अंत में सहजजकर्ता **स्लाइड 12/ चार्ट** के माध्यम से मौखिक भाषा विकास के सत्र का समेकन करें।

5. डिकोडिंग

कुल समय – 3:15 घंटे

उद्देश्य :

- **डिकोडिंग की परिभाषा**
- **सुदृढ डिकोडिंग क्षमता की आवश्यकता**
- **वर्ण समूह का महत्व**
- **व्यवस्थित डिकोडिंग प्रक्रिया की समझ**

विषय	**डिकोडिंग परिचय**
समय	**30 मिनट**
सामग्री	**पेन, नोटबुक, गपूड़ा लिपि का चार्ट, तम्बोला खेल के प्रिंट्स**
प्रक्रिया का विवरण	**चर्चा :** सहजकर्ता भाषा शिक्षण पर पिछले सत्रों में हुई बातचीत से चर्चा को जोड़ते हुए नीचे दिए प्रश्नों पर चर्चा करेंगे: ● डिकोडिंग शब्द से क्या आशय है ? *(कुछ उत्तर लेने के बाद आगे की चर्चा के लिए नीचे दिए गए चित्र का उपयोग करें)* **(2000 हज़ार वर्ष पूर्व मिस्र भाषा में गढ़ा गया एक सन्देश)** ● चित्र पर चर्चा में निम्न प्रश्नों को उपयोग में लें : ● **यह क्या है ?** **अपेक्षित जवाब:** कुछ चित्र बने हुए हैं। ● सहजकर्ता: क्या इन चित्रों में कुछ नियम दिख रहा है ?क्या ये सिर्फ बेतरतीब ढंग से बने हुए हैं या कुछ सन्देश गढ़ने का प्रयास किया जा रहा है? **अपेक्षित जवाब :** हाँ कुछ सिलसिलेवार ढंग से चित्र बनाए गए हैं। ● सहजकर्ता: हाँ, हम ऐसा ही करते हैं जब कुछ संकेतो/ चित्रों से कुछ मतलब या अर्थ निर्माण करना चाहते हैं। ● **क्या इन सकेंतो को आप पढ़ सकते हैं?**

	अपेक्षित जवाब : नहीं, इसके लिए हमें इन चित्रों को क्या अर्थ दिए गए है उसका पता होना चाहिए। • सहजकर्ता: बिल्कुल, क्या ऐसा ही कुछ हम लिपि चिन्हों के साथ भी करते हैं - **क्या हम इस चित्र सन्देश से कोई अर्थ निकाल सकते हैं?** **अपेक्षित जवाब** : हाँ, अगर हम सीख लें तो। • **आपके अनुसार लिखने का या लिपि का निर्माण क्यों हुआ ?** **अपेक्षित जवाब :** अपनी बातों को लिख कर प्रेषित करने के लिए ..... लिखित संदेश सभी को एक ही संदेश प्रेषित करने में मददगार होता है। अलग -अलग अर्थ निर्माण की आशंका कम होती है, जो कि मौखिक बातचीत में होती है। **वर्ण शिक्षण पर चर्चा** **समेकन:** ▪ डिकोडिंग वह प्रक्रिया है जिसमें हम लिपि या लिपि चिन्हों को पढ़ना सीखते है। ▪ इन लिपि चिन्हों को वर्णों / अक्षरों के रूप में समझते हैं। ▪ अक्षरों और वर्णों की ध्वनियों को पहचान कर उन्हें जोड़कर शब्द का सही उच्चारण करना सीखते हैं। • सहजकर्ता संतुलित पद्धति का सत्र याद दिलाते हुए प्रतिभागियों के साथ अच्छे डिकोडिंग कौशल के विकास पर चर्चा करेंगे : ▪ **जब पाठक तेज़ी से शब्दों को पहचानते हैं तब वे अपना पूरा ध्यान ध्वनियों को जोड़ने के बजाए, पढ़े गए शब्दों और वाक्यों के अर्थ समझने पर लगा सकते हैं।** ▪ **प्रवाह पूर्ण डिकोडिंग का सीधा असर बेहतर समझ बनाने में होता है।** ▪ **इसलिए अच्छा पाठक होने के लिए डिकोडिंग कौशल का मज़बूत होना बहुत ज़रूरी है।**

समय	**60 मिनट**
सामग्री	**पेन, नोटबुक, गपूड़ा लिपि का चार्ट**
विषय	**सुदृढ डिकोडिंग क्षमता क्यों ज़रूरी है? इन्हें कैसे विकसित किया जाए ?**
प्रक्रिया का विवरण	 • इस विषय पर चर्चा की शुरुआत एक गतिविधि से करें। • गतिविधि में गपूड़ा लिपि के चार्ट का उपयोग करें। 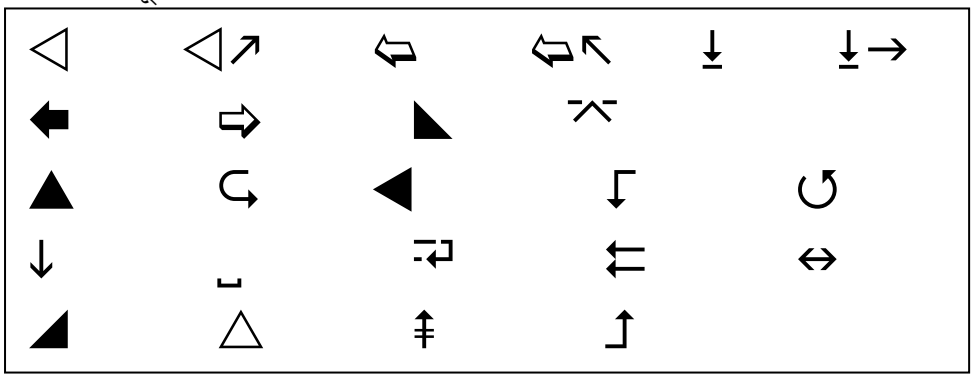

- प्रशिक्षक उपरोक्त चार्ट की एक बड़ी कापी पहले से ही तैयार कर लें और प्रतिभागियों को दिखाएँ। ***सहजकर्ता अपने पास मदद के लिए छोटी चिट जिसमें देवनागरी में इन संकेतो के लिए वर्ण लिखे हों– रखें।***
- परम्परागत तरीके से वर्ण शिक्षण की तरह दो- तीन बार वर्णमाला को पढ़ें और प्रतिभागियों को अपने पीछे दोहराने को कहें। ***ध्यान दें कि कोई देवनागरी में नयी लिपि की आवाज़ ना लिखे।***
- दोहरान के बाद सम्भागियों से बीच बीच में से कोई वर्ण पूछें। बोर्ड पर किसी वर्ण को लिखकर पूछें-कि- **यह क्या लिखा है ?**
- सामूहिक दोहरान करने के बाद सभी को गपूड़ा लिपि के वर्ण उनकी कॉपी या पन्ने पर लिखने के लिए कहें। ऐसा तीन-चार बार करें, सही सुन्दर लिखावट के साथ ताकि वे ध्वनि-चिन्ह पहचान कर सकें। *प्रतिभागियों के साथ बारहखडी का उदाहरण भी काम में लेकर कहें कि बारहखडी में बीच में कोई अक्षर पहचानने के लिए प्रारम्भ से ही पहचान करके बताते हैं।*
- अब सहजकर्ता निम्म प्रश्नों द्वारा चर्चा बढाएँ :
  - क्या समस्या आई?
  - नई लिपि सीखते समय किस प्रकार की प्रक्रियाओं से गुजरना और जूझना पड़ता है?
  - इसको करते हुए उन्होने क्या महसूस किया?
  - 24 वर्ण और 6 मात्रायें लिखने और पहचानने में कितना समय लगेगा?
  - अगर ये दोगुनी हो जाएँ तो कितना समय लगेगा?
- *चर्चा समेकित करते हुए परम्परागत डिकोडिंग शिक्षण की चुनौतियों को समेकित करें:*
  - यह उबाऊ है।
  - अभ्यास की कमी है।
  - टी.एल.एम. की कमी है।
  - इतने सारे वर्ण और अक्षर रटने होते हैं, और उनकी आकृतियाँ याद रखना बोझिल काम है। अगर बड़ों के लिए है तो बच्चों के लिए कितना होगा!
- इसके हल के रूप में हमें ज़रूरत है कि एक व्यवस्थित डिकोडिंग शिक्षण हो जिसमे ऊपर चर्चा की गयी सभी चुनौतियाँ ख़त्म हो जाएँ।

वर्ण – मात्रा समूह : डिकोडिंग शिक्षण का वैकल्पिक तरीका

- अब 2 व 3 वर्ण / अक्षर वाले शब्द गपूड़ा लिपि में लिखकर रखें और उन्हें बारी – बारी अलग प्रतिभागियों से पढ़ने के लिए कहें। इस अभ्यास को कई शब्दों के साथ करें।

प्रतिभागियों से चर्चा करें:

क्या आपने अक्षर मात्रा शिक्षण की अन्य विधि के बारें में सुना है, कोई अनुभव है। प्रतिभागियों के जवाब आने के बाद छतीसगढ़ की पाठ्य पुस्तक का उदाहरण लेकर बात करें जिसमें -
वर्ण – मात्रा समूह का उपयोग करते हुए
जैसे दो मात्राओं अ, आ, व चार वर्ण ग , म , न , र
आप इन चार वर्णों और दो मात्राओं के साथ शब्द बनाना, पढ़ना आदि की गतिविधियाँ कर सकते हैं।

इस प्रकार थोड़े -थोड़े वर्णों के साथ बच्चों को वर्ण पहचान -पठन आदि के अभ्यास किए जा सकते हैं। बच्चे इससे जल्दी इन संक्रियाओं को सीख लेते हैं व अन्य वर्णों पर भी इन्हें उपयोग करने लगते हैं।

समेकन

- यदि शुरूआत में तीन-चार वर्णों और दो-तीन मात्राओं को पहचानने और उनसे शब्द बनाने का काम किया जाए तो बच्चों को पढ़ना सीखना ज़्यादा रोचक और बेहतर लग सकता है।
- इस प्रकार बच्चे जल्दी शब्द / वाक्य पठन की तरफ बढ़ेंगे। यह आत्मविश्वास कि 'मैं पढ सकता हूँ या मैं पढने लगा हूँ' जितनी जल्दी बच्चों में आता है वह उन्हें अधिक से अधिक सीखने में मदद करता है। कुछ वर्ण और एक या दो मात्रायें (वर्ण समूह) सिखाकर शब्द बनाने और पढने का काम बच्चों के साथ प्रारम्भ कर देना चाहिए।
- अभ्यास के रोचक तरीक़े और शिक्षक द्वारा धैर्य प्रतीकों को पहचानने औरउनको लिखने में ज़रूरी होता है।

नोट: प्रतिभागियों को यह भी बता दें कि ये 'गपूड़ा' प्रतीक और लिपि बच्चों को नहीं सिखाई जानी है। यहां उद्देश्य केवल यह समझना था कि नई लिपि सीखते समय किस प्रकार की प्रक्रियाओं से गुज़रना और जूझना पडता है। इसको केवल अपरिचित लिपि के कारण ही लिया गया है।

समय	**60 मिनट**
सामग्री	• **पैन, नोटबुक, शब्द ग्रिड, अक्षर ग्रिड, डिकोडेबल पाठ, प्रोजेक्टर, स्क्रीन** **वीडियो 1 : ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनाना** **वीडियो 2 : अक्षर से शब्द बनाए**

विषय	• **व्यवस्थित डिकोडिंग शिक्षण कैसे हो ?** • **वर्ण-समूह का महत्व, डिकोडिंग शिक्षण के चरण और डिकोडिंग के टी.एल.एम.**
प्रक्रिया का विवरण	 • **गतिविधि:** सहजकर्ता तीन समूह बनवाएँ। ▪ **समूह 1 को – क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ (हिंदी वर्णमाला के वर्ण)** ▪ **समूह 2 को – न, र, ल, क, ना, रा, ला, का (प्रारम्भिक भाषा शिक्षण के वर्ण)** ▪ **समूह 3 को – म, ब, अ, ऊ, उ, ग, ल, ट (हरियाणा राज्य पाठ्यपुस्तक "झिलमिल")** • इन तीनो समूहों को 5 मिनट में ज्यादा से ज्यादा सार्थक शब्द बनाने के लिए समय दें। • सभी से उनकी गिनती पूछें। (सबसे ज्यादा समूह 2 के शब्द बनेंगे) • इस बात से सहजकर्ता वर्ण समूहों की आवश्यकता और उनसे जुडी व्यवस्थित डिकोडिंग का परिचय दें। **व्यवस्थित डिकोडिंग हेतु आवश्यक बिन्दुओं पर चर्चा:** *(प्रत्येक बिंदु के साथ सहजकर्ता पिछले सत्र में आई चुनौती को भी जोड़ते रहें और उनके हल के तौर पर इन बिन्दुओं की महत्ता पर जोर दें।)* **वर्ण समूह –** ऐसे वर्ण जो घर की भाषा में बच्चे ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं; जिससे सीखने के बाद इनके बने सार्थक शब्दों और छोटे पाठों को पढ़कर बच्चे अर्थपूर्ण पढने पर जल्दी पहुँच सकें। इनके बनाने (बच्चों के शब्द भण्डार से 200 – 300 राज्य की भाषा के शब्द लेकर उनमे से वर्ण चुनना और समूह बनाना) और हर राज्य में विभिन्न होने (हर राज्य की भाषा अलग जिससे सबके वर्ण समूह एक से नहीं हो सकते) के कारणों पर चर्चा करें। **क्रमवार प्रक्रिया –** जब वर्णों को सिखाया जाए तो उसकी प्रक्रिया क्रम के साथ हो। पहले उसको पहचानने का काम हो, फिर भरपूर अभ्यास हो, फिर आकृति लिखने का परिचय और अभ्यास। इसी प्रकार जब अक्षर सिखाएँ तो मात्रा को अलग से न सिखाकर शुरूआती कक्षा में वर्ण के साथ जोड़कर ही पढ़ाई जाए। इसके भी अभ्यास के लिए विविध गतिविधियाँ और सामग्री हो। **ब्लेंडिंग / जोड़कर पढ़ना –** कुछ वर्ण / अक्षर सिखाने के बाद तुरंत ही इनको जोड़कर गति से पढ़ने / पहचानने का काम हो। इसके लिए भी सामग्री और गतिविधियाँ भरपूर हों। इससे बच्चे अर्थपूर्ण पठन की तरफ जल्दी पहुँच सकते हैं। • यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि **पिछले तीनों बिन्दुओं पर काम तुरंत** होता है। जैसे ही कुछ वर्ण सीखे, उनके साथ मात्रा लगाना, और पर्याप्त अभ्यास के बाद उन्हें जोड़कर पढ़ने में समय लगाया जाता है। सभी बिन्दुओं को सीखने के बीच में लम्बे अंतराल नहीं होते। डिकोडिंग के सभी उप कौशलों में विविध सामग्री एवं गतिविधियाँ इस्तेमाल की जाती हैं। • TLM जैसे ग्रिड, वर्ण / अक्षर कार्ड, पासे, आदि।

- संयुक्त अक्षर कक्षा 1 में सिखाने की जल्दी नहीं होना।
- मात्रा सिखाने का तरीका वर्ण के साथ है। चरण 2 में मात्राओं को वर्ण के साथ मिलाकर बोला जाता है। नियम पकड़ते हुए बच्चे उच्चारण सीख जाते हैं। चरण 3 में भले ही उसको अलग से उच्चारित किया जाता है पर तब भी वर्ण के साथ ही बोला जाता है।
- प्रक्रिया के क्रम के बाद सहजकर्ता प्रत्येक बिन्दुओं से जुड़े खेलों, गतिविधियों और सामग्री पर भी थोड़ी चर्चा करें ।
- कक्षा 1 की राज्य की पाठ्यपुस्तक को इन बिन्दुओं के नज़र से देखें और विश्लेषण करें।

इस प्रक्रिया को इस आकृति में दिए क्रम में समझ सकते हैं -

I. ध्वनि (विशेषकर प्रथम छोटी ध्वनि) जागरूकता का विकास

II. वर्ण / अक्षर परिचय चिन्हों की ध्वनि पहचानना

III. ध्वनियों को जोड़कर शब्द बोलना / पढ़ना

IV. स्वचालित शब्द-पहचान की क्षमता का विकास

V. सुपरिचित (अक्षरों व शब्दों वाले) पाठ पढ़ने का अभ्यास

VI. कई शब्दों को दृश्य-शब्द के रूप में पढ़ते हुए प्रवाहपूर्वक डिकोडिंग

- **अंत में डिकोडिंग के खेल खिलाएं एवं टी.एल.एम. दिखाएँ :**
  - **खेल-** डिकोडिंग का प्रचलित खेल **तम्बोला / बिंगो** नाम से जाना जाता है। इसकी सामग्री, नियम सभी पीडीऍफ़ के तौर पर फोल्डर में हैं। पूर्व तैयारी में इनके प्रिंट लेकर सत्र में जाएँ। और अंत में 10 मिनट के लिए खिलाएँ।
  - **टी.एल.एम.** - अक्षर को पहचानने के लिए ग्रिड –

ला	बी	म
ब	मा	ली
मी	क	बा
की	मा	बा

अक्षर ग्रिड

- **ब्लेडिंग के प्रयास अक्षर कार्ड, शब्द पहिया, फ्लिप बोर्ड, पासे -**

- **लम्बे शब्द बोलने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास –**

ग	म	ला	गमला		थ	र	म	स	थरमस
गा	ज	र	गाजर		द	श	र	थ	दशरथ
त	ब	ला	तबला		गि	ल	ह	री	गिलहरी

आगे बढ़ते हुए अक्षर बदल कर और कुछ ज्यादा वर्णों के साथ ब्लेडिंग के अभ्यास करवाएँ।

- **डिकोडेबल पाठ -**

मछली चली, मचक–मचक
चील चली, चहक–चहक
जहाज चला, लचक–लचक
हम चले, मलक–मलक

संदर्भ स्रोत : गपूडा लिपि चार्ट

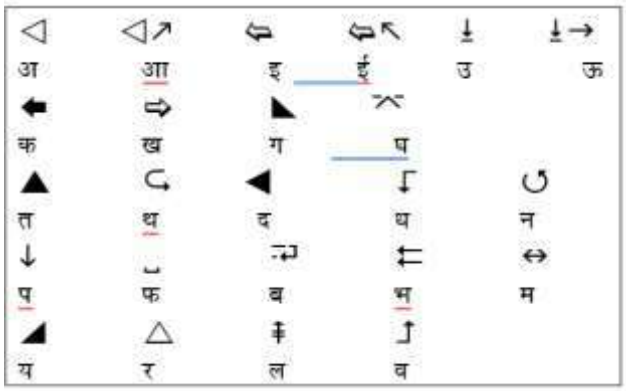

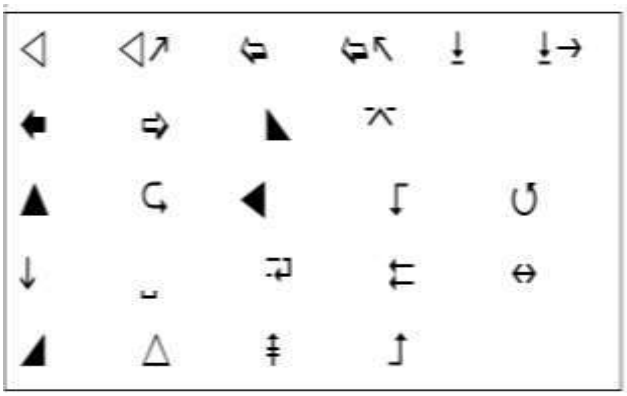

6. पठन

कुल समय – 5:00 घंटे

उद्देश्य :

- **कुशल पाठक किसे कहते हैं और वह किस तरह पढ़ते हैं इसे समझ पाएँगे।**
- **पठन विकास के चरणों को समझ पाएँगे।**
- **प्रतिभागी प्रवाहपूर्ण पठन की आवश्यक शर्तें एवं पठन की रणनीतियों पर समझ बना पाएँगे।**

विषय	**पढ़ना क्या है और पढ़ने में शामिल तत्व**
समय	45 **मिनिट**
उद्देश्य	**कुशल पाठक किसे कहते हैं और वह किस तरह पढ़ते हैं इसे समझ पाएँगे।**
सामग्री	**व्हाइट वोर्ड, मार्कर, पठन के वीडियो लिंक, कहानी "तीन जादुई भाई" की प्रतियाँ प्रत्येक प्रतिभागी के लिए**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें अभी तक हमनें इस बुनियादी साक्षरता की इस कार्यशाला में बहुत से विषयों पर बात की है जैसे – संतुलित पद्धति, मौखिक भाषा विकास, शब्द पहचान आदि। अब हम एक मुख्य विषय **पठन** चर्चा करेंगे। लेकिन इससे पहले मैं आप सभी को एक कहानी पढ़ने के लिए दे रहा / रही हूँ। आप सब उस कहानी को पढिए। • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को कहानी **"तीन जादुई भाई"** की एक –एक प्रति पढ़ने के लिए दें। • सभी प्रतिभागियों के कहानी पढ़ लेने के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि-क्या सभी ने कहानी पढ़ ली है? (अधिकतर प्रतिभागी इसका उत्तर **हाँ** में देंगे।) • अब सहजकर्ता सभी से पूछें कि जब आप सभी कहानी पढ़ रहे थे तो आप सबके दिमाग मे क्या चल रहा था ? • इस पर प्रतिभागियों कि संभावित प्रतिक्रिया इस प्रकार आ सकती हैं - **सोच रहे थे, तर्क वितर्क हो रहा था, कल्पना कर रहे थे, विचार कर रहे थे, आदि।** • प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। • इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि ठीक है अब यदि हम पूछें की आप पढ़ने के लिए कौन सी प्रक्रिया काम मे ले रहे थे तो आप क्या कहेंगे ? • इस पर भी प्रतिभागियों कि संभावित प्रतिक्रिया इस प्रकार आ सकती हैं - **डिकोड कर रहे थे, जोड़कर पढ़ रहे थे, पढ़कर समझने का प्रयास कर रहे थे, आदि।** • प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। • उपरोक्त प्रतिक्रियाओं को समेकित करते हुए सहजकर्ता प्रतिभागियों से कहें कि ठीक है यदि हम कहते हैं कि और पढ़ने के लिए हम डिकोड कर रहे थे और पढ़कर समझने के लिए हमारे दिमाग में **तर्क, सोच,**

विश्लेषण, कल्पना आदि प्रक्रियाएँ चल रही थीं। तो हमें बच्चों को पढ़ना कैसे सीखना चाहिए या हम ये कहें कि बच्चों को एक कुशल पाठक कैसे बनाएँ।

(इस पर अधिकतर प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया होगी कि बच्चों को वर्ण मात्र सिखाएँ, वर्ण-मात्रा जोड़कर शब्द बनाना सिखाएँ, फिर वाक्य पढ़ना सिखाएँ।)

- उपरोक्त सभी प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें।
- अब सहजकर्ता उपरोक्त प्रतिक्रियाओं को समेकित करते हुए प्रतिभागियों से कहें कि ठीक है यदि हम ये मान लें कि सभी बच्चे वर्ण- मात्रा जानते हैं तो क्या हम यह कह सकते हैं कि बच्चे को ठीक से पढ़ना आता है। (यहाँ सहजकर्ता **ठीक से** को ज़ोर देकर बोलें)
- हम किसे कहेंगे कि अमुक बच्चे को ठीक से पढ़ना आता है और अमुक बच्चे को ठीक से पढ़ना नही आता। या हमारी कक्षा का ये बच्चा कुशल पाठक है और ये बच्चा कुशल पाठक नही है।
- इस पर प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। (प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार हो सकती है- जो **बच्चे वर्णों व मात्राओं को जोड़कर शब्द बना लें, जो बच्चे अटक-अटक कर न पढ़ें,** इत्यादि।)
- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अब हम सब एक विडियो देखेंगे और एक ऑडियो सुनेंगे। आप सभी को देखकर / सुनकर बताना है कि इसमें से हम किस बच्चे को कहेंगे कि इसे ठीक से पढ़ना आता है।
- सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को निम्न दोनों वीडियो / आडियो बारी-बारी से दिखाएँ / सुनाएँ।

वीडियो – पठन 1-

ऑडियो – पठन 2-

- वीडियो दिखाने के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से बातचीत शुरू करें और पूछें कि इनमें से आप किसे और क्यों कहेंगे कि इस बच्चे को ठीक से पढ़ना आता है ?
- प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें।
- प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को समेकित करते हुए सहजकर्ता बताएँ, कि बच्चे के ठीक से पढ़ने के लिए ये तीन चीजें महत्त्वपूर्ण होती हैं - **पहली की पढ़ा जाने वाला पाठ बच्चे के स्तर का हो दूसरी बच्चा पाठ का एक गति के साथ पढे यानि उसे अटक अटक कर न पढे। (यहाँ सहजकर्ता अटक अटक के पढ़ने का कोई एक उदाहरण देकर बताएँ।) और तीसरी बच्चा पढ़कर उसका मतलब समझ पाए।**

1- बच्चे के स्तर का पाठ

2- बच्चे के पढ़ने की गति

3- पढ़कर समझ पाये

इसका मतलब एक कुशल पाठक बनने के लिए आवश्यक है कि इन तीनों चीजों का समावेश हो।

	(यहाँ सहजकर्ता बच्चे के स्तर के पाठ को विस्तार से बताएँ कि बच्चे के स्तर का पाठ हम किसे कहते हैं। **ऐसा पाठ जो बच्चे के लिए निर्धारित लक्ष्य हो उसको प्राप्त करने की प्रगति में तथा अब तक सीखे हुए स्तर के अनुरूप हो साथ ही उसमें 10 प्रतिशत से अधिक कठिन शब्द नही हों तथा बच्चा उन्हें डिकोड करने के साथ- साथ समझ भी पाए। बच्चों द्वारा पाठ में 4-5 शब्दों से ज्यादा शब्दों को गलत नही पढ़ना चाहिए।)**

विषय	**पठन विकास के चरण**
समय	**45 मिनिट**
उद्देश्य	**पठन विकास के चरणों को समझ पाएँगे**
सामग्री	**व्हाइट वोर्ड मार्कर, प्रवाहपूर्ण पठन के हैंड-आउट**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से बात करें कि अभी तक हमने बात की है कि **कुशल पाठक कौन होते हैं और वे कैसे पढ़ते हैं ?** • तो आप बताएँ कि क्या बच्चा कक्षा में आते ही कुशल पाठक बन जाता है ? • सहजकर्ता प्रतिभागियों से उत्तर की अपेक्षा **नहीं** में करेंगे। • तो फिर आपके अनुसार वे कौन-कौन से चरण हो सकते हैं जिसके द्वारा बच्चा एक कुशल पाठक बनता है ? • प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर लिखते रहें। संभावित प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार हो सकती हैं- **सबसे पहले वर्ण-मात्राओं का ज्ञान** **फिर जोड़कर शब्द बनाना, वाक्य पढ़ना और अंत में पाठ पढ़ पाना साथ ही पढ़कर समझ पाना।** • उपरोक्त बिन्दुओं को समेकित करते हुए सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को बताएं कि जब बच्चा पढ़ना शुरू करता है तो उसे विभिन्न चरणों से गुजरना पढ़ता है **जिसमे जहाँ वो आरंभ में किताबों को उलटता-पलटता हैं प्रिंट से रूबरू होता है वहीं कुछ समय बाद वह इन सबके साथ-साथ वर्णों मात्राओं को सीखकर शब्द और वाक्य पढ़ रहा होता है।** **कुछ समय बाद बच्चा धीरे-धीरे वाक्यों, छोटी कहानियों और छोटे-छोटे पाठों को पढ़ते हुए, बढ़ते हुए धारा प्रवाह के साथ पढ़ने लगता है।** • जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि पठन विकास के ये चार मुख्य चरण होते हैं। • यहाँ सहजकर्ता **पठन कौशल पीपीटी की स्लाइड 2-6** के द्वारा प्रतिभागियों को बताएँ कि एक कुशल पाठक बनने के लिए बच्चे को निम्न चरणों से गुजरना होता है। ▪ **उभरता पठन-(आरंभ में किताबों को उलटना-पलटना, प्रिंट से रूबरू होना)** ▪ **डिकोडिंग (वर्णों मात्राओं को सीखकर शब्द और वाक्य पढ़ना)** ▪ **प्रारंभिक और मध्यवर्ती पठन(धीरे-धीरे वाक्यों, छोटी कहानियों और छोटे-छोटे पाठों को)** ▪ **धाराप्रवाह पठन**

	(इन सबमें समझ हमेशा शामिल होती है बच्चे को प्रत्येक चरण में किसी न किसी प्रकार से समझना होता है।)

विषय	**प्रवाहपूर्ण पठन की आवश्यक शर्तें**
समय	**75 मिनिट**
उद्देश्य	**(धाराप्रवाह पठन) प्रवाहपूर्ण पठन की आवश्यक शर्तें क्या हैं, उन्हें समझ पाएँगे**
सामग्री	**व्हाइट वोर्ड मार्कर, पीपीटी, प्रॉजेक्टर, कहानी की किताब (बिल्ली के बच्चे)**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें किअभी तक हम सबने बात की कि **एक कुशल पाठक कौन होता है? और पठन विकास के चरण कौन से हैं ?** जिसमें हम सभी ने एक चरण **धाराप्रवाह पठन** की बात की है जिसमे मुख्यत बच्चे की **पढ़ने की गति यानि प्रवाहपूर्ण** पठन को रखा गया है। लेकिन हमें प्रवाहपूर्ण पठन से पहले ये आवशयक है कि हम पठन को समझे कि पठन में क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं। • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से पूछें कि पठन में कौन-कौन सी चीज़ें शामिल हैं। • सहजकर्ता,प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को बोर्ड पर लिखते रहें। जो संभावित रूप से निम्न हो सकती हैं - **(वर्ण-मात्रा, शब्द, वाक्य)** हो सकता है कुछ प्रतिभागी इसमें समझ को भी शामिल कर पाएँ। • अब सहजकर्ता सभी से कहें कि पठन में समझ एक मुख्य बिन्दुन हैं यदि समझ नही होगी तो वो पठन नही कहलाएगा। अतः ये आवश्यक है कि हमें बच्चों के साथ समझकर पढ़ने पर काम करना चाहिए। • इसके लिए बच्चों के **साथ पढ़ने के पहले,पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद** कुछ चीजों को शामिल करना चाहिए जिससे कि बच्चे की उस पाठ पर एक पुख्ता समझ बन पाएँ। • यहाँ सहजकर्ता **पढ़ने के पहले,पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद** के बारे में प्रतिभागियों से बात करें। **पहला चरण: पढ़ने से पहले** ▪ **किताब का परिचय देना :** बच्चों को किताब दिखाकर उसका नाम लिखने वाले का नाम मुख पृष्ठ पर बने चित्र आदि के बारे में बात करें। किताब किस विषय के बारे में हो सकती है इस पर भी कुछ चर्चा करें। ▪ **सुनाने का उद्देश्य तय करना:** क्योंकि पाठ अध्यापक पढ़ रहे हैं और बच्चे केवल सुन रहे हैं तो अध्यापक जिस तरह से कहानी का परिचय कराएँगे। उससे बच्चों की रुचि पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। यह वैसा ही है जैसे किसी फिल्म की झलक या ट्रेलर देखकर हम फिल्म के बारे में अपनी अपेक्षाएँ बनाते हैं। उदाहरण के लिए अध्यापक किसी मज़ेदार प्रश्न वाक्य या चित्र की ज़रिए बच्चों की उत्सुकता बढ़ा सकते हैं, जिससे वे गौर से सुनें। जैसे- सिर्फ़ यह बताने से कि किसी कहानी में जादूगर एक केकड़े से आम मँगवाता है बच्चों को सुनने के लिए बेताब कर देगा। ▪ **पूर्वज्ञान को सक्रिय करना:** किताब के विषय के बारे में बच्चों के अनुभवों को बाहर लाने का प्रयास करें। पहले बच्चे बताएँ कि वे उस शीर्षक के बारे में क्या जानते हैं। फिर अध्यापक उनके पृष्ठभूमि ज्ञान को और अधिक बाहर लाएँ या बढ़ाएँ। उदाहरण के लिए बिल्ली के बच्चे किताब दिखाकर अध्यापक तालाब के बारे में या दिखाए गए

जानवरों के बारे में बच्चों से पूछ सकते हैं - **क्या बिल्ली तैर सकती हैं, पाइप क्या होता है, आदि।** हो सकता है किसी इलाके के बच्चों ने अभी तक तालाब न देखा हो। ऐसे में चर्चा करके उनके सीमित पृष्ठभूमि ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। **जैसे- क्या तुम जानते हो कि पाइप का काम क्या होता है, पाइप किस चीज़ से बनता है आदि।** बच्चों को भी किताब के बारे में सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

- **नई शब्दावली पर चर्चा:**
  यदि कहानी में कुछ नए शब्द या अवधारणाएँ आई हैं जिन्हें बच्चे नहीं जानते (जैसे- उचकना,सिरा,पाइप आदि) उन पर बच्चों से चर्चा करें। कहानी पढ़ते समय भी फिर से रुककर इन शब्दों पर बात की जा सकती है।

- **बच्चों से अनुमान लगवाना:**
  बच्चों को किताब के चित्रों को दिखाकर यह अंदाज़ा लगाने के लिए प्रोत्साहित करें कि कहानी किस बारे में हो सकती है उसमें किस तरह के पात्र हो सकते हैं आदि। अगर किताब में ढेर सारी तस्वीरें हैं तो बच्चों को उन्हें एक-के-बाद-एक आराम से देखने का अवसर भी दिया जा सकता है। इससे बच्चों में रुचि और जिज्ञासा बढ़ जाती है और कहानी सुनते वक्त वे उत्सुक रहते हैं कि उनके अनुमान सही निकले या नहीं।

दूसरा चरण - पढ़ने के दौरान

अध्यापक उत्साह और हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाते हैं कहानी को भाव-भंगिमा के साथ गति और लय पर ध्यान देते हुए सुनाया जाता है। इससे कहानी में बच्चों को मज़ा आता है साथ ही आदर्श और प्रवाहपूर्ण पठन का अनुभव मिलता है तथा अर्थ निकालने में मदद मिलती है।

- **प्रश्न पूछना:**
  बच्चों की सुनकर समझने की क्षमता को मज़बूत करने के लिए अध्यापक बीच में रुककर उन घटनाओं के बारे में कुछ पूछते हैं जो पहले घटी हैं। ऐसे में बच्चों की केवल याददाश्त की जाँच करने के बजाए, बच्चों की भावनाएँ, प्रतिक्रियाएँ या उनकी राय पूछनी चाहिए। मगर पहली बार कहानी पढ़ते वक्त बहुत ज़्यादा सवाल नहीं पूछने चाहिए, वरना कहानी का प्रवाह टूट सकता है और बच्चों की दिलचस्पी घट सकती है।

- **आगामी घटनाओं का अनुमान लगाना:**
  कहानी में नाटकीय मोड़ आने पर अध्यापक ठहरकर बच्चों से पूछ सकते हैं-

  अरे अब आगे क्या होगा आगे इस पर भी बात हो सकती है कि बच्चों ने जो अनुमान लगाए वे सही निकले या नहीं। उदाहरण के लिए बिल्ली के बच्चे कहानी में अध्यापक चौथे पन्ने में जब चूहा उचककर आते के डिब्बे में कूद गया तो रुक कर बच्चों से पूछ सकते हैं कि- बिल्ली के बच्चे क्या करेंगे ! इसी तरह आगे के पेज पर पूछा जा सकता है- अब मेंढक दिखने पर बिल्ली के बच्चे क्या करेंगे।

- **अध्यापक द्वारा सोचते हुए बोलना:**
  अध्यापक पढ़ते समय बच्चों के सामने बीच-बीच में अपनी सोच को भी उजागर करते हैं। वे ज़ाहिराना तरीके से खुद से सवाल पूछ सकते हैं, जैसे- बिल्ली के बच्चे कहानी के आठवे पन्ने में अध्यापक बोल सकते हैं- अरे यह मेंढ़क धुए के पाइप में क्यों घुस गया। बिल्ली के तीनों बच्चे भी पाइप मे क्यों घुस गए आदि।

- **कहानी को फिर से पढ़ना:**
  अध्यापक एक बार पूरी कहानी को बिना रुके प्रवाह से पढ़ सकते हैं। यह भी संभव है कि बच्चे कहानी को फिर से कई बार सुनना चाहें। बच्चों को अपनी पसंद की कहानियों को बार-बार सुनना और पढ़ना अच्छा लगता है क्योंकि उनके लिए महसूस की हुई भावनाएँ और क्षण बार-बार सजीव हो जाते हैं। बच्चों की शक्तिशाली कल्पना शक्ति उन्हें कहानी में प्रवेश कर जीने और महसूस करने का मौका देती है।

तीसरा चरण: पढ़ने के बाद

- **कहानी की संक्षिप्त समीक्षा:**
  कहानी के मुख्य पात्रों और घटनाओं पर चर्चा हो सकती है। बच्चों को क्या अच्छा लगा,कौन अच्छा लगा या बुरा लगा, कहाँ सबसे ज़्यादा मज़ा आया आदि। बच्चों द्वारा लगाए गए अनुमानों पर भी बात हो सकती है।

- **समझ को विस्तार देना:**
  किसी भी पाठ के साथ बहुत गहन समझ विकसित की जा सकती है। पाठ के साथ कई तरह से बच्चों की समझ बढ़ाई जा सकती है, जैसे :

  1- कहानी को अपने अनुभव से जोड़ना- क्या तुम भी कभी पाइप में घुसे हो ? क्या बिल्ली के बच्चे पानी में रह सकते हैं ?
  2 - खुले छोर के प्रश्न पूछना (निष्कर्षात्मक या प्रयोगात्मक प्रश्न), जैसे- बिल्ली के बच्चे तुम्हें कैसे लगे? जब मेंढक पाइप मे घुसा तो बिली के बच्चो को कैसा लगा होगा ? कहानी को पहली बार पढ़ने पर सवालों का स्तर आसान रख सकते हैं और कहानी को एक-दो बार पढ़ने के बाद निष्कर्षात्मक और प्रयोगात्मक सवाल ज़्यादा पूछ सकते हैं।

- **कहानी को अपने शब्दों में सुनाना:**
  बच्चे कहानी की घटनाओं, पात्रों, समस्या और समाधान आदि का सार दे सकते हैं। समूह में चर्चा कर, कहानी को अपने शब्दों में सुना सकते हैं, उस पर अभिनय कर सकते हैं।

- **कहानी पर चित्र बनाना:**
  बच्चे कहानी के किसी पात्र या घटना पर चित्र बनाएँ। अध्यापक बच्चों को बताने का अवसर दें कि उन्होंने क्या बनाया है और फिर बच्चों के चित्रों पर शीर्षक लिखने में मदद करें।
  कहानी के साथ सार्थक जुड़ाव और समझ को आगे बढ़ाने के लिए पढ़ने के बाद कुछ और गतिविधियाँ भी कराई जा सकती हैं। जैसेः

  - **कहानी पर नाटक करें।**
  - **कहानी की विषयवस्तु के बारे में चर्चा आगे ले जाने के लिए आस-पास के इलाके में घूमने जाएँ।**
  - **कहानी के चित्रों को क्रम में लगाने की गतिविधि करें।**

- अब सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अब जब हम सब पठन पर चर्चा कर चुके हैं तो क्या अब हमें बच्चों को एक प्रवाहपूर्ण पाठक बनाने के बारे मे सोचना चाहिए साथ ही यह भी सोचना चाहिए कि प्रवाहपूर्ण पठन की कुछ शर्तें भी हो सकती हैं ?

	• सहजकर्ता प्रतिभागियों के उत्तर की अपेक्षा **हाँ** में करेंगे, साथ ही उनसे पूछेंगे कि आपके अनुसार प्रवाहपूर्ण पठन के लिए क्या आवश्यक हैं या हम कहें, तो वे कौन सी शर्तें हो सकती हैं जो प्रवाहपूर्ण-पठन के लिए आवश्यक है ? • सहजकर्ता, प्रतिभागियों के द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को बोर्ड पर लिखते रहें। जो संभावित रूप से निम्न हो सकती हैं- **वर्ण-मात्रा पहचान होनी चाहिए, शब्द बनाना आना चाहिए, जोड़कर पढ़ना आना चाहिए, साथ ही समझ के साथ पढ़ना जिसमें सोच, कल्पना, तर्क इत्यादि शामिल हों** • सहजकर्ता इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहें कि क्या केवल उपरोक्त इन चीजों के होने से ही से बच्चे प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ने लग जाते हैं ? या उसमें कुछ और भी शामिल होता है। • इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए मैं आप सभी को एक प्रवाहपूर्ण-पठन का एक हैंड आउट पढ़ने के लिए दे रहा / रही हूँ आप सब उसे पढिए और उसके द्वारा ये समझने की कोशिश कीजिए कि **प्रवाहपूर्ण पठन क्यों आवश्यक हैं और उसमें क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं ?** • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को प्रवाहपूर्ण पठन के **हैंड-आउट की एक एक प्रति पढ़ने के लिए दें,** इसके लिए सहजकर्ता सभी को **10 मिनिट का समय दें।** • सभी के इस हैंड-आउट को पढ़ लेने के बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों के साथ इसपर चर्चा करते हुए उनसे पूछें कि प्रवाहपूर्ण पठन क्यों आवश्यक हैं और उसमें क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं। • प्रतिभागियों द्वारा बताए गए बिन्दुओं को सहजकर्ता बिन्दुवार बोर्ड / चार्ट-पेपर पर लिखते रहें। • अंत में इस पूरी चर्चा को समेकित करते हुए सहजकर्ता सभी को बताएँ की समझ के साथ पढ़ने के लिए प्रवाहपूर्ण पठन बहुत आवश्यक है। और प्रवाहपूर्ण पठन की आवश्यक शर्तें इस प्रकार हैं- **1- शब्द पहचान में सटीकता** **2- शब्द-पहचान में स्वत:स्फूर्तता** **3- भाव के साथ पढ़ना**

विषय	**पठन विकास की रणनीतियाँ**
समय	75 **मिनिट**
उद्देश्य	**पठन विकास की रणनीतियों को समझ पाएँगे**
सामग्री	**रिम पेपर, पेन**
प्रक्रिया का विवरण	अब सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछें कि जब हम ये कहते हैं कि ये (**उभरता पठन, डिकोडिंग, प्रारंभिक और मध्यवर्ती पठन, धाराप्रवाह पठन**) सभी पठन-विकास के चरण हैं तो हम अपनी कक्षाओं में इन सबके (**उभरता पठन, डिकोडिंग, प्रारंभिक और मध्यवर्ती पठन, धाराप्रवाह पठन**) लिए क्या-क्या गतिविधियाँ करवाते हैं। • प्रतिभागियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं को सहजकर्ता बोर्ड पर एक सूची के रूप में लिखते रहें। जैसे- ***पढ़कर सुनाना*** ***दोहरान करवाना*** ***स्वतंत्र पठन***

	सामूहिक पठन आदि। • अब सहजकर्ता उस सूची मे से किसी एक गतिविधि का नाम लेकर पूछें कि यह गतिविधि कक्षा में कैसे करवाते हैं ? • सहजकर्ता किसी प्रतिभागी से किसी एक गतिविधि (**पढ़कर सुनाने**) को करके दिखाने के लिए कहें। • इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को कहें कि आप सभी ने पठन विकास की रणनीतियों की कुछ रणनीतियाँ बताई हैं अब हम पठन की कुछ और रणनीतियों को इस पीपीटी के माध्यम से जानने का प्रयास करेंगे। • इसके बाद सहजकर्ता पूरी गतिविधि को समेकित करते हुए **पठन कौशल पीपीटी की स्लाइड 7-15** के माध्यम से पठन की रणनीतियों के बारे मे चर्चा करें। • इसके बाद सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को बताएँ कि इन रणनीतियों पर हम विस्तार से अपनी दूसरी कार्यशाला मे चर्चा करेंगे।

विषय	**सत्र आकलन**
समय	**30 मिनिट**
उद्देश्य	**सभी प्रतिभागी पठन के सत्र को कितना समझ पाएँ, इसका आकलन करना**
सामग्री	**रिम पेपर, पेन**
प्रक्रिया का विवरण	• सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों से कहें कि अब हम एक खेल खेलेंगे। • सहजकर्ता सभी प्रतिभागियों को 3-3 के समूह में विभाजित कर दें। • समूह बनाने के लिए सहजकर्ता खेल -कितने भाई कितने, एक जैसी चीजों वाले या किसी अन्य गतिविधि का प्रयोग करें। • जब सभी के समूह बन जाये उसके बाद सहजकर्ता सभी समूहों में एक- एक रिम पेपर व एक-एक पेन देकर सभी को निर्देश दें कि सभी को इस पूरे सत्र में क्या समझ मे आया उससे संबन्धित एक-एक प्रश्न बनाना है। • जब सभी समूह प्रश्न बना चुके हों तो सहजकर्ता सभी समूहों से वो प्रश्न की पर्चियाँ ले लें और उन्हे एक डिब्बे मे डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर दें। • इसके बाद सहजकर्ता स्वेच्छा से किसी एक समूह को एक पर्ची उठाकर उसपर लिखे प्रश्न का जवाब देने के लिए कहें। • यदि प्रश्न का जवाब दें मे कोई बात छूट गई है या जवाब गलत है पहले जिस समूह ने वो प्रश्न बनाया था वो उसे वो ठीक करने को कहें व बाकी समूह बाद मे उसमे अपनी बात जोड़ें। • सबसे अंत में सहजकर्ता अपनी बात को जोड़ें।

7. लेखन

कुल समय – 2:00 घंटे

उद्देश्य :

- **लेखन क्या है?**
- **लेखन विकास के आयामों की समझ**
- **वर्तमान में भाषा कक्षा में लेखन कार्य का एक विश्लेषण और पहचान**
- **लेखन सीखने – सिखाने का संतुलित तरीका**
- **लेखन विकास की रणनीतियों और गतिविधियों की समझ**

विषय	**लेखन क्या है ?**
समय	**30-40 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन सत्र का परिचय**
सामग्री	**गतिविधि ; स्लिप – जोड़ी में**
प्रक्रिया का विवरण	**सहजकर्ता प्रतिभागियों पूछें :** • **सहजकर्ता प्रतिभागियों के साथ एक गतिविधि से द्वारा सेशन की शुरुआत करें।** **Slide 1 –3** **गतिविधि** – लेखन गतिविधि से जुड़ी निम्न गतिविधियों की पर्चियाँ बना कर जोड़ो में प्रतिभागियों को दें: 1. देख कर लिखना - नाना जी नानी से बोले, अगर कहीं पा जाऊँ घोड़ा, तुमसे हो जाऊँ मैं ऊँचा थोड़ा । 2. वर्तनी सही करें – कुरसी , केल, जनगल, शैर, साथि, शुरुवात, सारथि, बेहेन, कीताब, ब्यापार, दुआर, हाथि, अधीक 3. सही विराम चिन्ह लगाना –अच्छा क्या बात है, क्या बात है मेरी बेटियाँ गंभीर नज़र आ रही हैं, आप हमें यह सब क्यों बता रही हैं, मम्मी मैं आपके दिए इस सिलाई के ज्ञान की बात कर रही हूँ 4. वाक्य संरचना सही करना – किताब बच्चा पढ़ता है, नाचती है रमा, बालक रहता सोता है, गाती पूजा है गाना, कड़कती है बिजली, है रहता रोहन भागता, घर मेहमान आते हैं, मोहन पढ़ता पुस्तक है, पसंद होती है हर बच्चे को आइसक्रीम, वह बटुआ भूल हमेशा अपना जाती है, पृथ्वी गोलाकार है। 5. कछुआ खरगोश कहानी को कछुए के नज़रिए से लिखें। 6. सब्जी वाले से तोल – मोल की बातचीत के बारे में लिखें। 7. अपने किसी आदर्श व्यक्ति को धन्यवाद का नोट लिखें।

8. दिए गए चित्र पोस्टर से संबंधित जो आपके मन में आ रहा है उसे लिखें।
9. कहानी को आगे बढ़ाएं – "मुझे जलेबी बहुत पसंद है। ..."

स्लाइड 4

- **सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछें:**
  प्र . आपका इस गतिविधि का कैसा अनुभव रहा ?
- **सहजकर्ता प्रतिभागियों के अनुभवों के मुख्य शब्द बोर्ड पर लिखें।**
  जैसे – यांत्रिक था, मज़ा आया, और मुश्किल हो सकता था, क्या लिख रहे थे समझ ही नहीं आया, उबाऊ था, बहुत जल्दी कर लिया आदि।
- **सहजकर्ता इन बिन्दुओं पर चर्चा करें:**
  जब हम लेखन के बारे में सोचते हैं तो बहुत बार सही वर्तनी, सही विराम चिन्ह, सही वाक्य संरचना आदि तक रह जाते हैं। ये सब लेखन के लिए जरुरी आयाम है पर यह 'लेखन' नहीं है।
  ज़रा सोचिए – तो लेखन आखिर है क्या?

स्लाइड 5 -

चर्चा:

- **लेखन क्या है?**
  ऊपर दी गई गतिविधि (slide 1 and 2) से जुड़ते हुए आगे बात करें। लेखन ऊपर दी गई सभी गतिविधियों का मिश्रित रुप है। जिसमें पीपीटी की मदद से इस चर्चा को आगे ले कर जाए।

स्लाइड 6

- **सहजकर्ता - स्लाइड की मदद से लेखन क्या है पर चर्चा –**
  - लेखन का उपयोग हम अपने **विचार व्यक्त** करने के लिए, **उद्देश्यों को पूरा करने** के लिए तथा अपनी **सोच को एक विस्तृत रूप** देने के लिए भी करते हैं।
  - अपने **विचार और भावनाओं को व्यक्त** करने के लिए।
  - किसी विषय आधारित **जानकारी को दूसरों के सामने प्रस्तुत** करने के लिए।
  - दूसरों के साथ अपनी **राय साझा करने के लिए, विरोध** जताने के लिए।
  - फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि माध्यम **से अपने अनुभव या मत साझा** करने के लिए।

स्लाइड 7

- **सहजकर्ता - प्रश्न प्रतिभागियों से पूछें ?**
  क्या हम जो कुछ भी लिखते हैं उसे 'लेखन' कह सकते हैं?

दैनिक जीवन में हम खरीदारी की सूची बनाना, हिसाब लिखना, पाठ की कार्य योजना बनाना, सन्देश देने के लिए ई – मेल, मेसेज या चिठ्ठी लिखना, रास्ता जानने के लिए सड़को पर लगे संकेत देखना आदि लेखन करते हैं।

स्लाइड 8

- **सहजकर्ता - इस सेशन के समेकन के लिए इस स्लाइड पर आए, एक - एक कर इन बिन्दुओं पर चर्चा।**

	1. लेखन **लंबे समय तक चलनेवाली प्रक्रिया** है। 2. अपने **विचार या सोच को लिखित रूप में प्रस्तुत करने वाला हर व्यक्ति लेखक** होता है। 3. बच्चों के **लेखन पर काम करते समय उन्हें सोचने के अवसर** देना आवश्यक है। 4. हम लिखने के **पहले, दौरान और बाद में भी उसके बारे में सोचते** हैं। 5. लेखन, **पाठक और उद्देश्य से जुड़ा हुआ है**। 6. लेखन **हमारी सोच से गहराई से जुड़ा** हुआ है। 7. **सिर्फ अक्षर, शब्द, या वाक्य को देखकर या सुनकर लिखित प्रतीकों में बदलने** को लेखन नहीं कह सकते। 8. लेखन और लिखित **सामग्री हमारे दैनिक जीवन** में महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

समय	**20 मिनट**
उद्देश्य	**वर्तमान लेखन तरीके / प्रचलित तरीके / बच्चे कैसे लिखते हैं ? एक झलक**
सामग्री	**पीपीटी और चर्चा**
प्रक्रिया का विवरण	• **सहजकर्ता प्रतिभागियों से प्रश्न पूछें** आप सभी अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते हैं और आप में से कुछ समन्वयक भी होंगे। तो आप बताइए कि: ▪ कक्षा में आपको लेखन के दौरान कौन-कौन सी गतिविधियाँ होती दिखती हैं? ▪ क्या उसमें बच्चों को अभिव्यक्त करने के मौके मिलते हैं? ▪ क्या उन गतिविधियों में बच्चे सक्रीय रूप से जुड़े हुए होते हैं? ▪ क्या अध्यापक इन गतिविधियों की योजना बना कर आते है ? • **सहजकर्ता प्रतिभागियों के आए उत्तर को ध्यान में रखें,** फिर **स्लाइड 9 और 10** • पीपीटी में दिखाए गए कुछ दृश्यों को दिखा कर उन पर विचार करने को कहें। **स्लाइड 11** • **सहजकर्ता फिर स्लाइड की मदद से चर्चा करें-** ▪ क्या आपकी कक्षाएं इनके जैसे देखती हैं या अलग दिखती हैं ? ▪ क्या इन कक्षाओं में बच्चों को **विचार व्यक्त** करने का मौका मिला था। ▪ क्या उन गतिविधियों में बच्चे सक्रीय रूप से जुड़े हुए होते हैं ? **स्लाइड 12** **समेकन** ▪ अर्थपूर्ण लेखन न कर पाना ▪ स्वतंत्र लेखन करते समय हड़बड़ा जाना ▪ लेखन को उबाऊ प्रक्रिया समझना ▪ बच्चों के अनुभव और आवाज़ को स्थान न मिलना ▪ सोचने से ज़्यादा याद करने पर निर्भर होना

समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन सीखने – सिखाने का संतुलित तरीका**
सामग्री	**पीपीटी, चर्चा**
प्रक्रिया का विवरण	 • **सहजकर्ता प्रतिभागियों के साथ एक गतिविधि करवाएं** **स्लाइड 13** • **आइए एक गतिविधि करते हैं।** ▪ आप सभी इस कमरे में बैठें हैं। इसके बारे में कुछ लिखिए। ▪ आपके पास 2 मिनट हैं। • **चर्चा आगे बढ़ने के लिए सहजकर्ता के बिंदु-** ▪ फिर कुछ बोर्ड पर एक टेबल बनाएं (कुछ इस तरह से) और ▪ 7 – 8 प्रतिभागियों से उनके आलेख पढ़कर सुनाने के लिए कहें। ▪ कमरे में 7 पंखे हैं। ▪ 3 खिड़कियाँ हैं। आदि **यहाँ यांत्रिक उत्तर आने दीजिए।** ▪ इस कमरे ने मुझे पहली कार्यशाला की याद दिलवादी, उसमें मैंने ..... किया था। ▪ यह खिड़की कितनी अच्छी है इसके माध्यम से मैं ..... **यहाँ प्रतिभागियों के सोच, अनुभव, पूर्वज्ञान आदि से जुड़े उत्तर लिखें।** • **सहजकर्ता बिंदु लिखने के बाद चर्चा करें।** ▪ आपको और इनको दोनों को एक ही विषय दिया गया था, समय भी सामान्य था – फिर आपके लेखन में इतना अंतर क्यों ? **इसका सबसे बड़ा कारण है कि, हमने लेखन को कभी इस तरह से देखा ही नहीं। कभी विचार ही नहीं किया कि लेखन और हमारी सोच कुछ इस तरह हो सकती है।** **अगर हम ऐसा लिखते हैं तो हमारे बच्चों से हम कैसे सोच लेते हैं कि वो लेखन के द्वारा अभिव्यक्ति कर पाएंगे।** हमे अपने बच्चों को सोचने के मौके देने होंगे। हमें उनके साथ इस प्रक्रिया से गुज़रना होगा। **स्लाइड 14** • **आइए इसको बेहतर समझते हैं लेखन कौशल के दो आयामों की मदद से -** ▪ **बुनियादी कौशल** ▪ **उच्च स्तरीय कौशल**

स्लाइड 15

- **सहजकर्ता के लिए चर्चा के बिंदु**

  अच्छी लेखन क्षमता के लिए प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के बुनियादी और उच्चस्तरीय, दोनों प्रकार के लेखन कौशल का विकास होना आवश्यक है।

  एक ओर जहाँ अक्षर, वर्ण, विराम चिन्ह, वाक्यों आदि पर कुछ सालों में हो जाता है,

  वही विषय के बारे में सोचना, शीर्षक देना, अपने विचार लिखना, संशोधन सम्पादन करना आदि जैसे लेखन कौशलों का विकास लगातार चलता रहना चाहिए।

स्लाइड 16

- इन दोनों कौशलों पर लेखन के द्वारा कार्य ज़रुरी हो जाता है। पर ध्यान देने वाली बात है कि इनमें संतुलन होना महत्वपूर्ण हो जाता है। संतुलन कुछ इस तरह दिखता है :

ज़रा सोचिए : प्रारंभिक कक्षाओं में इन दोनों कौशलों को ध्यान में रखते हुए कार्य कैसे किया जा सकता है?

समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन के स्तर**
सामग्री	**पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	**स्लाइड 17** • **सहजकर्ता के लिए चर्चा बिंदु** 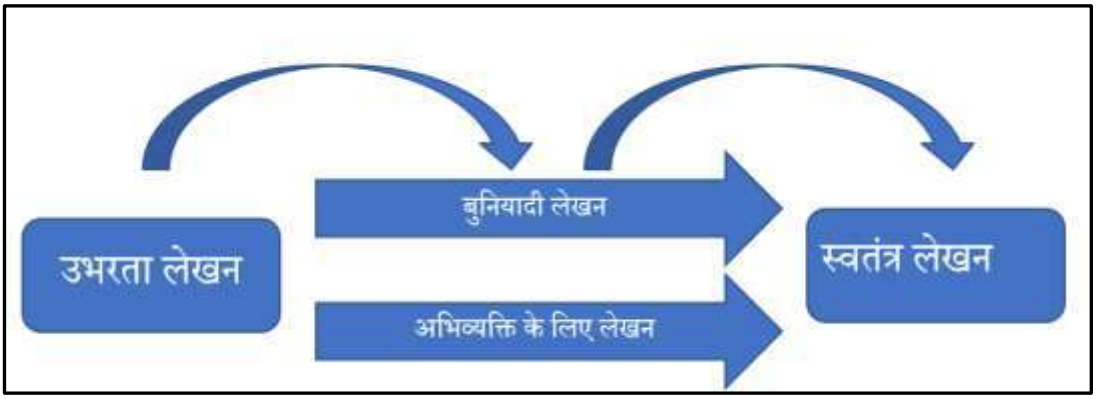 **स्लाइड 18** • **स्लाइड पर आने के बाद सहजकर्ता यह बिंदु रखें :** **उभरता लेखन :** परंपरागत लेखन न जानते हुए भी बच्चे बहुत कुछ व्यक्त करना चाहते हैं। उनके हाथ में अगर हम चाक या कलम दे, तो वे बड़े उत्साह से लकीरें या चित्र बनाने लगते हैं। यही से उनके उभरता लेखन की शुरुआत होती है। इस लेखन चरण में बच्चे यह नहीं जान रहे होते हैं कि अक्षर कैसे बनते हैं या हर अक्षर की ध्वनि क्या है, पर पहले वे प्रिंट की अवधारणाओं को समझने लगते हैं। इस शुरुआती दौर में बच्चे यह समझने लगते है कि '**अपने विचारों को लिखित रूप दिया जा सकता है**'। पर ध्यान देने वाली बात यह है कि बच्चे अपने द्वारा बनाए गए चित्रों या आड़ी- तिरछी लकीरों को समझा पाएं। **स्लाइड 19 और 20** **बुनियादी लेखन** • **चित्र दिखने के बाद सहजकर्ता यह बिंदु रखें** बुनियादी लेखन के दौरान बच्चे कुछ अक्षर / वर्ण / शब्द सीख रहे होते हैं| इसी दौरान बच्चे नई-नई वर्तनी भी लिखते हैं। इस चरण में बच्चे अपनी सोच स्पष्ट रूप से लिखने की कोशिश करते हैं पर उनके लेखन में गलतियाँ देखी जा सकती हैं। **स्लाइड 21** • **चित्र दिखने के बाद सहजकर्ता यह बिंदु रखें।**

	स्वतंत्र लेखन इस चरण में बच्चे साफ़ और स्पष्ट रूप से अपने विचार और सोच लेखन के द्वारा बता सकते हैं। यहाँ बच्चों का वाक्य संरचना, वर्तनी सब सही होता है। इस चरण में आते-आते बच्चे अपने लेखन का स्व-आकलन कर उसमें बदलाव कर संपादन भी कर सकते हैं।

समय	**20 मिनट**
उद्देश्य	**समेकन**
बिन्दु	**समेकन स्लाइड दिखाते हुए सहजकर्ता यह बिंदु पर चर्चा करें** **स्लाइड 22** ● लेखन केवल चिह्नों को लिखना नहीं है। इसमें लिखने से पहले सोचना तथा अपनी बात को क्रमबद्ध और तार्किक तरीके से लिख पाना सम्मिलित है। ● लेखन अभ्यास के लिए हर रोज़ निश्चित समय दें। ● लेखन के लिए बुनियादी और उच्च स्तरीय कौशल, दोनों प्रकार के लेखन कौशल की आवश्यकता होती है। ● शुरुआत में बच्चे आड़ी-तिरछी लकीरें बनाते हुए लेखन द्वारा अभिव्यक्ति करते हैं। धीरे-धीरे, जैसे उनके भाषायी कौशल विकसित होते हैं और वे समय के साथ स्वतंत्र लेखन की ओर बढ़ते हैं। ● लेखन गतिविधियाँ बच्चों के संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए, ताकि वे उसके बारे में सोचना और लिखना पसंद करें। ● अध्यापक को, बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार लेखन के मौके देना चाहिए। ● बच्चों द्वारा लिखी सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करना चाहिए। ● मैं करती / करता हूँ (अध्यापक द्वारा लेखन की आदर्श प्रस्तुति), हम करते हैं (साझा लेखन, जिसमें अध्यापक बच्चों के उत्तरों / विचारों को लिखते हैं और बच्चे उसे कॉपी में उतार सकते हैं।), अब तुम करो (बच्चे अलग-अलग व्यक्तिगत रूप से लिखने लगते हैं) इस प्रकार लेखन क्षमता का विकास किया जाना चाहिए।

समय	**30 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन सत्र का परिचय**
सामग्री	**गतिविधि ; स्लिप – जोड़ी में**
प्रक्रिया का विवरण	 **गतिविधि**– लेखन गतिविधि से जुड़ी निम्न गतिविधियों की पर्चियाँ बनाकर जोड़ो में प्रतिभागियों को दें : 1. देखकर लिखना – नानाजी नानी से बोले, अगर कहीं पा जाऊँ घोड़ा, तुमसे हो जाऊँ मैं ऊँचा थोड़ा।

2. वर्तनी सही करें – कुरसी, केल, जनगल, शैर, साथि, शुरुवात, सारथि, बेहेन, कीताब, ब्यापार, दुआर, हाथि, अधीक।
3. सही विराम चिन्ह लगाना –अच्छा क्या बात है, क्या बात है मेरी बेटियाँ गंभीर नज़र आ रही हैं, आप हमें यह सब क्यों बता रही हैं, मम्मी मैं आपके दिए इस सिलाई के ज्ञान की बात कर रही हूँ।
4. वाक्य संरचना सही करना – किताब बच्चा पढ़ता है, नाचती है रमा, बालक रहता सोता है, गाती पूजा है गाना।
5. कछुआ खरगोश कहानी को कछुए के नजरिये से लिखना।
6. सब्जी वाले से तोल – मोल की बातचीत के बारे में लिखना।

चर्चा:

- गतिविधि पूरी होने के बाद उनसे उनका अनुभव पूछें।
- सहजकर्ता उनके अनुभव के मुख्य मुख्य शब्द बोर्ड पर लिखें।
  अपेक्षित जवाब – यांत्रिक था, मज़ा आया और मुश्किल हो सकता था, क्या लिख रहे थे समझ ही नहीं आया, उबाऊ था, बहुत जल्दी कर लिया आदि।

सहजकर्ता के लिए: अगर आपको समय की कमी हो तो आप, यहाँ आप शुरु की 1 - 4 की गतिविधियाँ और बाकी की 5 – 9 की गतिविधियों को एक साथ लिया जा सकता है।
अच्छा होगा कि आप हर गतिविधि का अनुभव पूछें और उसे बोर्ड पर लिखें। ताकि आप आने वाली सेशन में आपको इस चर्चा से मदद मिल सके।

चर्चा:

- जब हम लेखन के बारे में सोचते हैं तो बहुत बार सही वर्तनी, सही विराम चिन्ह, सही वाक्य संरचना आदि तक रह जाते हैं। ये सब लेखन के लिए जरुरी आयाम है पर यह **'लेखन' नहीं है।**

ज़रा सोचिए – तो लेखन आखिर है क्या ?

चर्चा:

- **लेखन क्या है ?**
  ऊपर दी गयी गतिविधि से जुड़ते हुए आगे बात करें। लेखन ऊपर दी गयी सभी गतिविधियों का मिश्रित रुप है। जिसमें पीपीटी की मदद से इस चर्चा को आगे लेकर जाएँ।

कुछ मुख्य बिंदु

- स्लाइड की मदद से लेखन क्या है पर चर्चा –
  - लेखन का उपयोग हम अपने **विचार व्यक्त** करने के लिए, **उद्देश्यों को पूरा करने** के लिए तथा अपनी **सोच को एक विस्तृत रूप** देने के लिए भी करते हैं।
  - अपने **विचार और भावनाओं को व्यक्त** करने के लिए।
  - किसी विषय आधारित **जानकारी को दूसरों के सामने प्रस्तुत** करने के लिए।
  - दूसरों के साथ अपनी **राय साझा करने के लिए, विरोध** जताने के लिए।
  - फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि माध्यम **से अपने अनुभव या मत साझा** करने के लिए।

	• **हैंड-आउट – 1: लेखन क्या है**- प्रतिभागियों को पढ़ने के लिए दें और पढ़ने के बाद, ज़रा सोचिए वाले प्रश्नों के लिए 1 मिनट का समय दें। ▪ क्या हम जो कुछ भी लिखते हैं उसे 'लेखन' कह सकतेहैं ? ▪ लेखन हमारे दैनिक जीवन में कितना महत्वपूर्ण है ? • स्लाइड में दी आकृति की मदद से लेखन के आयामों पर चर्चा करें। जैसे, दैनिक जीवन में हम खरीदारी की सूची बनाना, हिसाब लिखना, पाठ की कार्ययोजना बनाना, सन्देश देने के लिए ई – मेल, मेसेज या चिट्ठी लिखना, रास्ता जानने के लिए सड़को पर लगे संकेत देखना आदि।

समय	**15 मिनट**
उद्देश्य	**वर्तमान लेखन तरीके / प्रचलित तरीके / बच्चे कैसे लिखते हैं ? एक झलक**
सामग्री	**पीपीटी और चर्चा**
प्रक्रिया का विवरण	***चर्चा:*** • आप सभी अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते हैं और आप में से कुछ समन्वयक भी होंगे। तो आप बताइए कि- ▪ आपको लेखन के दौरान कौन-कौन सी गतिविधियाँ होती दिखती हैं ? ▪ क्या उसमें बच्चों को अभिव्यक्त करने के मौके मिलते हैं ? ▪ क्या उन गतिविधियों में बच्चे सक्रीय रुप से जुड़े हुए होते हैं ? ▪ क्या इन गतिविधियों की अध्यापक योजना बना कर लाते है ? • पीपीटी में दिखाए गए कुछ दृश्यों को दिखाकर सहजकर्ता उन पर विचार करने को कहें। ▪ क्या आपकी **कक्षाएँ इनके जैसे देखती हैं की अलग** ? ▪ क्या इन कक्षाओं में बच्चों को **विचार व्यक्त** करने का मौका मिला था। ▪ क्या उन गतिविधियों में **बच्चे सक्रीय रुप से जुड़े** हुए होते हैं? **समेकन** ▪ वर्तमान में कक्षाओं में और आपने जो पहले गतिविधि की थी क्या उनमें समानता है ? ▪ जो हमने पहले गतिविधि देखीं उन को ध्यान में रखते हुए हम इन दृश्यों को पूर्ण रूप से लेखन नहीं कह सकते। ▪ ऊपर दिए गए दृश्यों में करवाई जा रही गतिविधियाँ ज़रूरी है पर लेखन इस से ज्यादा है।

समय	**15 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन सीखने – सिखाने का संतुलित तरीका**
सामग्री	**पीपीटी, चर्चा**

प्रक्रिया का विवरण	• **गतिविधि** ▪ आप सभी इस कमरे में बैठें हैं, आप इसके बारे में कुछ 2 -5 मिनट लिखए ▪ प्रतिभागियों को लिखने दें और आप भी लिख लें। ▪ फिर कुछ बोर्ड पर एक टेबल बनाएँ (कुछ इस तरह से) और ▪ 7 – 8 प्रतिभागियों से उनके आलेख पढ़कर सुनने के लिए कहें। ▪ कमरे में 7 पंखे हैं। ▪ 3 खिड़कियाँ हैं। आदि **यहाँ यांत्रिक उत्तर आने दीजिए।** ▪ इस कमरे ने मुझे पहली कार्यशाला की याद दिलवादी, उसमें मैंने ..... किया था। ▪ यह खिड़की कितनी अच्छी है इसके माध्यम से मैं ..... **यहाँ प्रतिभागियों के सोच, अनुभव, पूर्वज्ञान आदि से जुड़े उत्तर लिखें।** ***पूछें:*** ▪ क्या आपको इन दोनों में कोई अंतर दिखा? अगर हाँ तो क्या और क्यों ? ▪ इसका सबसे बड़ा कारण हो सकता है ? ▪ आपका और इनका दोनों एक ही विषय दिया गया था, समय भी सामान्य था – फिर क्यों? ***चर्चा:*** • इसका सबसे बड़ा कारण है कि, हमने लेखन को कभी इस तरह से देखा ही नहीं। कभी विचार ही नहीं किया की लेखन और हमारी सोच कुछ इस तरह हो सकती है। • अगर हम ऐसा लिखते हैं तो हमारे बच्चों से हम कैसे सोच लेते हैं कि वो लेखन के द्वारा अभिव्यक्ति कर पाएँगे। • हमे अपने बच्चों को सोचने के मौके देने होंगे। • हम के साथ इस प्रक्रिया से गुज़रना होगा। हमे उनके सामने कुछ thinkaloud करके लिखना होगा। *(मैं सोच रही थी कि, इस कमरे की दीवार कितनी जरुरी है, अगर यह न हो तो छत नहीं डाल पाएंगे, ये कितनी मज़बूत होती है हर मौसम से बचाती ही ही है और कभी कभी आस पास की आवाजों से बचाती हैं। मेरी दादी कहती थी, दीवारों के कान होते हैं। इसकी वजह से मैंने एक बार दीवार पर बड़े बड़े कान बना दिए थे। पर आब जा कर समझ आया वोह क्या कहना चाहती थीं।)* • जबकि लेखन विकास के लिए दो प्रकार के कौशलों पर काम ज़रूरी हो जाता है। ▪ **बुनियादी कौशल** ▪ **उच्च स्तरीय कौशल**

	• इन दोनों कौशलों पर लेखन के द्वारा कार्य ज़रुरी हो जाता है। पर ध्यान देने वाली बात है कि इनमें संतुलन होना महत्वपूर्ण हो जाता है। संतुलन कुछ इस तरह दिखता है: 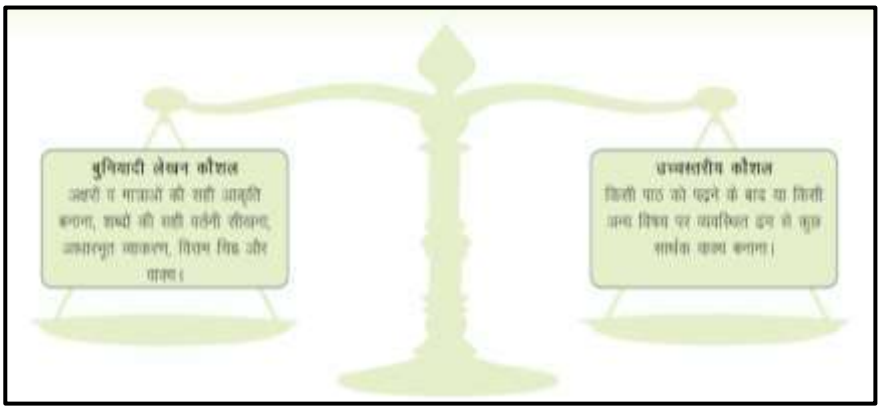 **ज़रा सोचिए : प्रारंभिक कक्षाओं में इन दोनों कौशलों को ध्यान में रखते हुए कार्य कैसे किया जा सकता है?**
समय	**20 मिनट**
उद्देश्य	**लेखन के स्तर**
सामग्री	**पीपीटी**
प्रक्रिया का विवरण	• प्रतिभागियों के उत्तर को लेकर आगे बढ़ें। 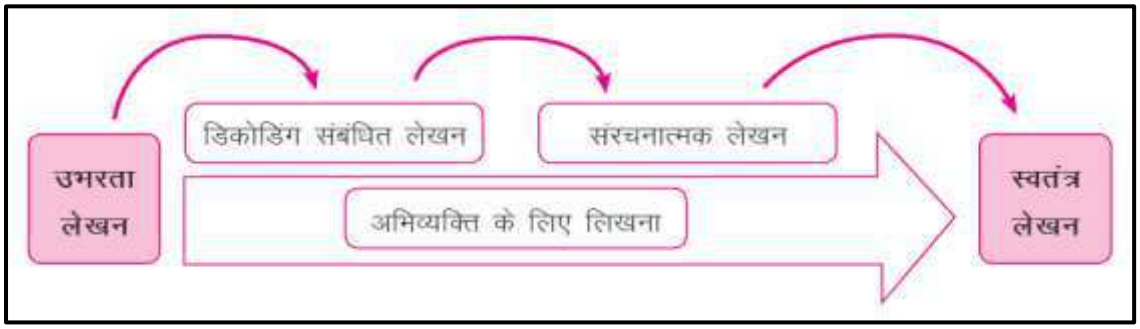

	उभरता लेखन : परंपरागत लेखनन जानते हुए भी बच्चे बहुत कुछ व्यक्त करना चाहते हैं। उनके हाथ में अगर हम चाक या कलमदे, तो वे बड़े उत्साह से लकीरें या चित्र बनाने लगते हैं। यही से उनके उभरते लेखनकी शुरुवात होती है। इस लेखन चरण में बच्चे यह नहीं जानरहे होते हैं कि अक्षर कैसे बनते हैं या हर अक्षर की ध्वनि क्या है, पर पहले वे प्रिंट की अवधारणाओं को समझने लगते हैं। इस शुरुआती दौर में बच्चे यह समझने लगते है कि '**अपने विचारों को लिखित रूप दिया जा सकता है**'। **आइए स्लाइड में दिए गये चित्र देखें :** 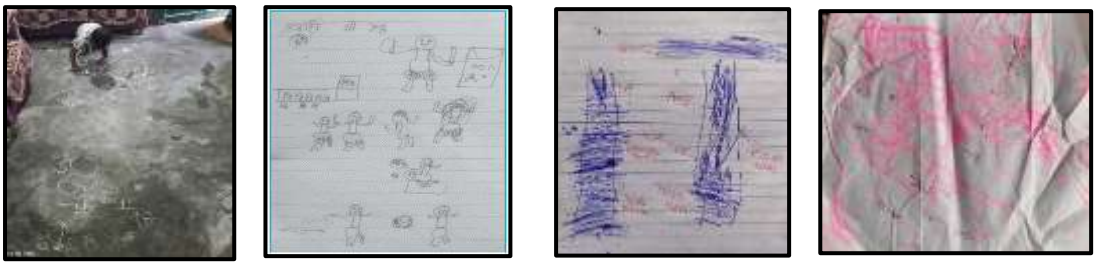 ● एक कक्षा में दोनों कौशलों पर कार्य करना कुछ इस तरह दिखता है और इस तरह बेहतर रुप से करवाया जा सकता है। **आकृति पर चर्चा करें:** ▪ संतुलित भाषा शिक्षण की कक्षा में जहाँ डिकोडिंग पर कार्य हो रहा होगा वहां हमे बच्चों के साथ डिकोडिंग संबंधित लेखन करवाना चाहिए। ▪ वहीं मौखिक भाषा, पठन के खंड पर कार्य के दौरान लेखन जोड़ा जाना चाहिए| इस समय बच्चों की अभिव्यक्ति पर कार्य किया जाना चाहिए। ▪ अभिव्यक्ति के लेखन में बच्चों द्वारा बनाई आड़ी-टेढ़ी लकीरों से लेकर चित्र, कुछ शब्द, वाक्य, अनुच्छेद सब शामिल हैं।

समय	**20 मिनट**
उद्देश्य	**समेकन**
बिन्दु	● लेखन केवल चिह्नों को लिखना नहीं है। इसमें लिखने से पहले सोचना तथा अपनी बात को क्रमबद्ध और तार्किक तरीके से लिख पाना सम्मिलित है। ● लेखन अभ्यास के लिए हर रोज़ निश्चित समय दें। ● लेखन के लिए बुनियादी और उच्च स्तरीय कौशल, दोनों प्रकार के लेखन कौशल की आवश्यकता होती है। ● शुरुआत में बच्चे आड़ी-तिरछी लकीरें बनाते हुए लेखन द्वारा अभिव्यक्ति करते हैं। धीरे-धीरे, जैसे- उनके भाषायी कौशल विकसित होते हैं और वे समय के साथ स्वतंत्र लेखन की ओर बढ़ते हैं।

	• लेखन गतिविधियाँ बच्चों के संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए, ताकि वे उसके बारे में सोचना और लिखना पसंद करें। • अध्यापक को, बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार लेखन के मौके देना चाहिए। • बच्चों द्वारा लिखी सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करना चाहिए। मैं करती / करता हूँ (अध्यापक द्वारा लेखन की आदर्श प्रस्तुति), हम करते हैं (साझा लेखन, जिसमें अध्यापक बच्चों के उत्तरों / विचारों को लिखते हैं और बच्चे उसे कॉपी में उतार सकते हैं।), अब तुम करो (बच्चे अलग-अलग व्यक्तिगत रूप से लिखने लगते हैं।) इस प्रकार लेखन क्षमता का विकास किया जाना चाहिए।

मेरे विचार

"स्कूल में किसी बच्चे की भाषा को खारिज करना बच्चे को खारिज करने के बराबर है।"

- जिम कमिन्स

लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन

ऑफिस पता : वी – 19, प्रथम तल, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली – 110016

वेबसाइट : www.languageandlearningfoundation.org

ईमेल : info@languageandlearningfoundation.org